स्टार पॉकेट सीरीज़

विलोम गति
(भाग—२)

पॉकेट साईज में
प्रथम संस्करण

मई १९६९
मूल्य दो रुपये

प्रकाशक :
स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा०) लि०
२७१५, दरियागंज, दिल्ली-६
के लिए भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

वितरक :
पंजाबी पुस्तक भंडार, दरीबा कलां, दिल्ली-६

मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, क्वीन रोड, दिल्ली

वे किसी अन्य संसार में पहुँच गये हैं।

जापान में लोग बहुत ही सफाई पसन्द बने थे। उज्ज्वल और बेल-बूटेदार कपड़े पहनते थे। इनके मकान विशेष रूप से साफ-सुथरे होते थे। पुराने रिवाज के हिन्दुस्तानियों की भाँति जूते उतारकर फर्श पर दरी या चटाई बिछाकर बैठते और काम करते थे।

रूस की भूमि पर पाँव रखते ही उनको ऐसा अनुभव हुआ कि वे एशिया छोड़ यूरोप के किसी देश में पहुँच गये हैं। यहाँ लोग और सड़कें व मकान उतने उज्ज्वल और साफ-सुथरे नहीं थे, जितने जापान वालों के थे। इस पर भी उनको यहाँ के लोगों के मुख पर उत्साह और लगन दिखाई देती थी। बन्दरगाह पर और नगर में, दुकानों और मकानों में लोग पूर्ण रूप से व्यस्त प्रतीत होते थे। जहाँ जापानियों को देख यह अनुभव होता था कि पूर्ण देश में कोई उत्सव मनाया जा रहा है और लोग हँसते-खेलते उस उत्सव में सम्मिलित हो रहे हैं, वहाँ रूस में लोग गम्भीर, दृढ़, निश्चयवान और जीवन-संघर्ष में लगे हुए प्रतीत होते थे।

कोटलवाल ने यह सब देखा और मजीद को अपने मन के भाव बताये, "यहाँ पहुँच मुझको ऐसा प्रतीत होता है कि मैं किसी जेल से छूटकर आया हूँ। यहाँ का प्रत्येक प्राणी ऐसे लगा हुआ है, जैसे वह अपने घर के कार्य में लगा हुआ हो, मानो उसको अपने प्रयत्न से स्वयं को लाभ व हानि होने वाली है।"

मजीद मुस्कराया और चुप कर रहा। कोटलवाल प्रत्येक वस्तु पर, जो वे देखते थे, प्रशंसात्मक टीका-टिप्पणि करता जाता था। वे एक घोड़ागाड़ी में बिठाकर कमिन्ट्रीन के कार्यालय को ले जाये जा रहे थे। कोटलवाल बहुत प्रसन्न प्रतीत होता था और मजीद उससे अधिक गम्भीर और चुप था। कोटलवाल को जब अनुभव हुआ कि मजीद कुछ कह नहीं रहा तो उसने पूछा, "कामरेड मजीद, तुम आज इतने चुप क्यों हो?"

"मुझको यहाँ समालोचना करने को कुछ दिखाई नहीं देता। जो कुछ मैं स्कॉटलैण्ड की राजधानी ऐडनबर्ग में देखा करता था, वही बल्कि उससे बहुत घटिया, मुझको यहाँ दिखाई देता है। मुझको लोग काम करते तो दिखाई देते हैं परन्तु वे किसी अदृश्य भय से दब रहे प्रतीत होते हैं।"

"कॉमरेड, तुम स्वयं कुछ निराशा में दब रहे प्रतीत होते हो।"

"हाँ, यदि रीता साथ होती तो यह सब-कुछ इतना शोकमय न

दोनों कुछ देर तक एक-दूसरे का मुख देखते रहे। अन्त में मजीद ने कहा, "अच्छी बात है। चलिये साथी, हमको तनिक इस नगर की सैर करा दीजिए।"

जब वे तीनों उस मकान से निकले तो सब काम-काज में लगे हुए लोग, उनको देख अपना काम छोड़कर, उनकी ओर देखने लगे। मजीद ने यह परिवर्तन देखा और कोटलवाल से कहा, "अपने इस साथी के कारण हम दर्शनीय हो गये हैं।"

"मैं भी देख रहा हूँ कि अब सब लोग हमारी ओर ऐसे देखने लगे हैं मानो उनके लिए करने को कुछ काम ही नहीं रहा।"

मजीद और कोटलवाल हिन्दुस्तानी में बातचीत कर रहे थे। इस पर उनका संरक्षक उनका मुख देखने लगा। मजीद उसके मुख पर चिन्ता की रेखायें देख, उससे अंग्रेजी में पूछने लगा, "आप हमारे मुख पर क्या देख रहे हैं?"

"आपकी भाषा समझने का यत्न कर रहा हूँ।" कोटलवाल ने उसको सन्तुष्ट करने के लिए कहा, "यह भाषा हिन्दुस्तानी है। हम आपस में इसी भाषा में बातचीत करने का अभ्यास रखते हैं। मेरे मित्र कह रहे थे, 'यह नगर बहुत सुन्दर है।' मैंने कहा था, 'वहाँ हमारे हिन्दुस्तान में ऐसा साफ और सुन्दर नगर देखने को नहीं मिलता।"

उनके संरक्षक ने उनके इन प्रशंसात्मक उद्‌गारों की ओर ध्यान न देते हुए कहा, "कॉमरेड्ज़, मैं आपको एक सम्मति देता हूँ। आप ऐसी किसी भाषा में बातचीत न करें, जो मैं नहीं समझता, अन्यथा आपका यह कार्य सोवियत रिपब्लिक के विरुद्ध, कोई षड्यन्त्र करना समझा जायगा।"

इस बात को सुन मजीद खिलखिलाकर हँस पड़ा। कोटलवाल गम्भीर हो चुप कर गया। मजीद ने उस संरक्षक से पूछा, "आपका शुभ नाम क्या है?"

"कॉमरेड निकोलाईवास्की।"

"कॉमरेड निकोलाईवास्की, हम कम्युनिस्ट हैं। अपने देश से इसी कारण निकाले गये है कि हम कम्युनिज़्म म विश्वास रखते हैं। हम [illegible]

"यह ठीक है। परन्तु हम किसी के कहने-मात्र पर विश्वास नहीं

वाले अपना माल लाकर सरकारी दुकानो मे जमा करा देते हैं और वहाँ से निश्चित दाम लेकर चले जाते है। सोने का देश से निकास तो सरकार ने सर्वथा बन्द कर दिया है। मछलियो की मांग देश में अधिक और निकास कम है। खालें विदेशो मे जाती है, परन्तु सोवियत सरकार उन देशों से कुछ मँगवाना नही चाहती, जहाँ इन खालों की खपत है। परिणाम यह है कि व्यापार सर्वथा बन्द है।

निकोलाईवास्की मजीद व कोटलवाल के साथ चलता हुआ बता रहा था कि जब से जापान वालो ने ब्लेडीवास्टक को विजय किया है, तब से सरकार इस बन्दरगाह पर कुछ अधिक धन व्यय नही कर रही। यही कारण है कि यह एक भारी सैनिक सुरक्षा का स्थान बनने के स्थान, अब एक उजडा हुआ गाव रह गया है।

मजीद ने बाजार में चलते हुए अपने सरक्षक से पूछा, "यहाँ कोई रैस्टराँ है या न नही ?"

"[illegible] पर भी यदि आप [illegible]"

"एक रूबल प्रति पीने वाले के लिए।"

"यह तो कुछ नही है। इतना तो खर्च किया ही जा सकता है। यदि हमे यहाँ कुछ अधिक दिन तक ठहरना पड़ेगा तो मैं अपनी माँ को लिखकर धन मँगवा सकता हूँ।"

"पर यहाँ सोना आये तो काम बन सकता है।"

"सोने के रूप मे ही मँगवाऊँगा।"

"वैसे तो आपको यहाँ लगभग दो मास लग ही जायेंगे। यदि इतने समय मे कुछ मँगवा सकते हैं तो मँगवा लीजिये।"

दो घण्टे-भर भ्रमण कर ये लौट पड़े और कमिन्ट्रीन के कार्यालय पर, जहाँ ये ठहरे हुए थे, आ पहुँचे।

: २ :

रात के समय जब सब सो जाते थे तो मजीद और कोटलवाल अपनी परिस्थिति पर विचार करने बैठ जाते थे। ब्लेडीवास्टक मे पहली रात से ही मजीद और कोटलवाल के दृष्टिकोण मे अन्तर प्रकट होने लगा।

कोटलवाल तो रूस के इस उजड़े हुए नगर मे पहुँच, यह अनुभव करता था कि वह स्वर्ग के किसी भाग मे पहुँच गया है। मजीद ने कोट-

हने को तो इन्टरनेशनल कम्यु-
में यह जी० पी० यू० का कार्या-
।"

शा के लिए है। जब इनको इस
स्तव मे कम्युनिस्ट हैं, तब ये हमारे
सबसे बडी बात खर्च की है।
रहा। ये लोग हम पर क्यो खर्चा

ः किसी देश में पहुँचता तो घर
से तो हम उनसे सम्बन्ध भी नहीं

रो की सरकार है। दुनिया के सब
न करते रहते हैं। ऐसी अवस्था मे
डी, जो फांस और इटली में मिल

तयो से सन्तोष नही हुआ। यह मत-
भाषा सीखने मे उनकी बहुत रुचि
स्थान पर जाकर सीखने लगे। उन
.गर में उपलब्ध था, मिल रहा था।
र खुला था, परन्तु सिवाय रात के
। कोई-न-कोई जी० पी० यू० का
वे अपनी इच्छा से न कहीं जा
र बाहर मकते थे। केवल रात के समय
उठ बैठने और अँधेरे मे धीरे-धीरे

हो गया। हिन्दुस्तान से जो सूचना
नहीं आई थी। एक दिन कोटलवाल
रेड, हमारा चित्त दिन-प्रतिदिन एक
ट हो गया है। अपने अधिकारियो से
इत्यादि देखने की स्वीकृति दिलवा

दूँगा। कठिनाई यह है कि रात के समय
ई अंग्रेजी पढ़ा-लिखा आदमी ढूँढ़ना
११

पड़ेगा । अभी आपको स्वतन्त्र घूमने की स्वीकृति नहीं दी जा सकती ।"

मजीद ने कहा, "कॉमरेड निकोलाईवास्की, यह तो हम जानते हैं कि अभी तक हम आपकी सरकार के बन्दी हैं। इसी कारण तो आपसे कहा है कि कोई ऐसा प्रबन्ध हो सके तो पता करना ।"

"होगा यह कि मुझे आधी रात तक आपके साथ रहना पड़ेगा। यहाँ अंग्रेज़ी पढ़ा-लिखा मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है ।"

"तो रात को तुम भी सिनेमा-थियेटर देख सकोगे । इसमें हानि ही क्या है ? मनोरंजन का मनोरंजन और ड्यूटी की ड्यूटी ।"

"यह तो ठीक है, परन्तु मैंने अभी नया-नया विवाह किया है और मेरी युवा स्त्री मेरे साथ जाने के लिए हठ करेगी ।"

"तो इसमें हानि क्या है ? हमको भी उसकी संगति का लाभ पहुँचेगा । हम उसका भी उतना ही मान करेंगे, जितना आपका करते हैं ।"

"वह अंग्रेज़ी जानती नहीं और आप पर व्यर्थ का बोझ होगा ।"

"कॉमरेड, तुम हमारी चिन्ता न करो ।"

जब मजीद ने बहुत आग्रह किया तो निकोलाई ने अपने अधिकारियों से उनकी बात कही । कठिनाई वही थी, जिसका निकोलाई को डर था । इनको कभी-कभी पब्लिक थियेटर में चलने के लिए उसको कहा गया । वह इस शर्त पर तैयार हो गया कि उसके साथ उसकी नवविवाहिता को भी थियेटर जाने की स्वीकृति और पास मिले । यह साधारण बात थी, स्वीकार कर ली गई ।

एक मास के बन्दी जीवन में यह पहला सायंकाल था, जो मजीद ने पसन्द किया । सायंकाल का भोजन कर निकोलाईवास्की दोनों को लेकर अपने घर चला गया । यह एक साधारण-सा, एक कमरे का मकान था । बाहर बरामदे में ही बैठक बनी हुई थी । निकोलाई की स्त्री ऐना अच्छी-खासी सुन्दर लड़की थी । निकोलाई पैंतीस वर्ष से अधिक आयु का था और ऐना बीस-इक्कीस वर्ष की । मकान में बिजली नहीं थी । तेल की दो कुप्पियों से प्रकाश हो रहा था । जब ये लोग वहाँ पहुँचे तो ऐना, जिसको इस प्रकार के मनोरंजन के अवसर बहुत कम मिलते थे, प्रसन्नता से उछलती हुई उनके साथ चलने को तैयार खड़ी थी । उसने इनका अपनी भाषा में स्वागत किया, जो ये नहीं समझे । जब निकोलाई ने समझाया तो मजीद ने उसको कहा कि वह उसकी ओर से अपनी

गया है।"

"मैं सत्य ही अपने को भाग्यशाली मानता हूँ, परन्तु इसमें मेरा दोष नहीं। मैंने तुमको भी पूरा अवसर दिया था।"

"देखो मजीद, जैसे तुम यौन-सम्बन्धी भूख से व्याकुल हो, वैसे ही मैं भी हूँ। इस कारण यदि तुमको इस सम्बन्ध में कुछ उपहार मिला, तो मैं उसका हिस्सेदार हूँ।"

"देखो कोटलवाल, तुम पूरा यत्न करना कि वह तुमको अपना प्रेम-उपहार दे। मैं तुमको पूरा अवसर दूँगा।"

"यह पर्याप्त नहीं। अगली बार जब वह थियेटर में जाय तो तुम कोई बहाना कर, घर पर ही रह जाना और मुझको अकेले जाने देना।"

"यह क्यों ?"

"केवल इसलिये कि मैं खुली प्रतियोगिता में तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता। मैं तुम्हारी उपस्थिति में सफल नहीं हो सकता।"

"पर मैं ऐसा क्यों करूँ ?"

"एक साथी को अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर देने के लिये।"

मजीद को यह मीमांसा समझ नहीं आई। इस पर भी, इस बात पर झगड़ा करने के स्थान वह मान गया। उसने कहा, 'बहुत अच्छा कॉमरेड, मैं अपने साथी के लिये सब-कुछ करने के लिये तैयार हूँ।"

परन्तु अगले नाटक पर जाने के दिन निकोलाई ऐना को नहीं लाया। मजीद ने कोटलवाल से कहा, "अब इसमें मैं क्या कर सकता हूँ ?"

कोटलवाल ने निकोलाई से पूछा, "आज तुम्हारी स्त्री नहीं आयेगी ?"

"नहीं।"

"क्यों ? उसका स्वास्थ्य तो ठीक है ?"

"कुछ मानसिक विकार उत्पन्न हो गया था। एक मास-भर, [illegible] के समय से [illegible] मजीद के [illegible] है। [illegible] हो जाय, [illegible]।"

मजीद एक बूढ़े [illegible] की ईर्ष्या को शान्त करने के लिये तैयार

था। कुछ टूटी-फूटी रूसी भाषा में उसने कहा, 'मी मयार्ग ग्रोपरि (हम फिर कभी मिलेंगे) निकोलाई को समझाऊँगा, इत्यादि।"

इस दिन के पीछे एक विशेष बात हुई। निकोलाई को किसी दू नगर में किसी काम के लिए भेज दिया गया और एक अन्य प्रश्नो व्यक्ति को उनका संरक्षक बना दिया गया।

मजीद ने इस आदमी से पूछा, "निकोलाईवास्की कहाँ गया है?

वह अपनी बीवी को लेकर खबारोवस्क चला गया है। यह नदी के किनारे दस्तकारी का एक केन्द्र है और वहाँ एक बन्दी-कैम्प उसमें उसको भेज दिया गया है।"

मजीद मन में विचार कर रहा था कि वह अपनी इच्छा से गया था उसको अधिकारियों ने भेजा है? इस जाने में उसकी पत्नी के व्य हार का भी कुछ हाथ है या एक साधारण घटना-मात्र है?

यह नया संरक्षक मजीद इत्यादि पर अधिक कड़ी दृष्टि रखता था अब उनको घूमने-फिरने की उतनी स्वतन्त्रता नहीं थी, जितनी निको लाई की संरक्षता में थी। कभी घूमते हुए वे समुद्र-तट की ओर जा चाहते तो संरक्षक कह देता था कि उधर वे नहीं जा सकते।

उनको पुनः थियेटर देखने का अवसर नहीं मिला। उनको थियेट साथ ले जाने वाला कोई विश्वस्त संरक्षक नहीं था। मजीद इससे ऊ गया था, परन्तु कोटलवाल अभी भी धैर्य से हिन्दुस्तान से सूचना आ की प्रतीक्षा कर रहा था। रात को सोने के समय मजीद ने कहा, "ह यहाँ आये तीन मास हो चुके हैं। इनको हमारे विषय में हिन्दुस्तान कोई सूचना क्यों नहीं आई?"

"दादा, आ जायगी। एक बात हमको समझ लेनी चाहिए कि य नया-नया राज्य है। इसकी रक्षा की चिन्ता में किसी निर्णय पर पहुँचने में देरी स्वाभाविक ही है। दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है।"

"सोवियत सरकार को बने आज बीस वर्ष से ऊपर हो गये हैं और अभी भी तुम इसको नई सरकार कहते हो? बीस वर्ष में तो एक पीढ़ी बदल जाती है। देखो मिस्टर कोटलवाल, मुझको इस कैद में तो बहुत विचार करने का अवसर मिला है और मेरा विश्वास मार्क्सिज्म से हट रहा है।"

"चुप! चुप!! मजीद दादा, यहाँ दीवारों के भी कान हो सकते हैं।"

के लिये भेजी गई है।"

मजीद को इस समाचार में कोई विशेषता प्रतीत नहीं हुई। समाचार-पत्र पढ़ने से यह प्रतीत होता था कि क्रीमिया में किसानों ने स्तालिन की आज्ञा नहीं मानी और उनसे आज्ञा मनवाने के लिये पुलिस भेजी गई है। बात मजीद के मस्तिष्क से निकल-सी गई थी, परन्तु अगले दिन उसके सामने यह एक अति भयकर रूप में उपस्थित हुई।

उनके निवास-स्थान से बाहर जाने को उचित ऋतु नहीं थी। तीन दिन से बरफ पड़ रही थी। रास्ते बन्द थे और इन दिल्ली गरम जलवायु में रहने वालों के लिये बहुत ही कठिनाई का समय आ गया था। भोजन अपने कमरे में करते थे। इनको अपने को गरम रखने के लिए 'वोडका' पीने को मिलती थी।

लंच का समय हुआ तो नित्य के विपरीत उनका संरक्षक उनके पास भोजन करने नहीं आया। रसोइया भोजन लाया और दोनों अकेले खाने लगे। इस स्थान पर पहला दिन था, जब इनको बिना संरक्षक की देख-भाल के भोजन करने का अवसर मिला। मजीद को इसमें कोई रहस्य प्रतीत हुआ। उसने रसोइये से पूछा, "आज कॉमरेड बोरिस नहीं आया ?"

"नहीं।"

"क्या बीमार हो गया है ?"

"नहीं, वह बाहर अपने कार्यालय में 'प्रवदा' पढ़-पढ़कर रो रहा है।"

"क्या लिखा है 'प्रवदा' में ?"

"उसके गाँव को मिलीशिया पुलिस ने गिराकर भूमि को समतल कर दिया है।"

मजीद को 'प्रवदा' में पढ़े समाचार का स्मरण हो आया। क्रीमिया के कुछ गाँवों में मिलीशिया पुलिस भेजी गई थी। उन गाँवों में उनके संरक्षक के गाँव का नाम भी था।

मजीद ने रसोइये से कहा, "जरा संरक्षक महोदय से कहिये कि मैंने उनसे एक बात पूछनी है। वे आ जायें तो उनकी बहुत कृपा होगी।"

भोजन के उपरान्त बोरिस आया और उनके सामने कुरसी पर बैठ गया। मजीद ने उससे सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा, "हमको बहुत दुःख है कि आपके गाँव में कुछ गड़बड़ हो गई है।"

ओं मे आँसू बहने लगे। इस पर
माचार है तुम लोगों का ?"
गा, "मेरे माता-पिता और मेरी
मैंने पढ़ाई की और स्कूलों मे
री देश-भक्ति की भावना जागृत
रख लिया गया। मुझको घर जाने
की छुट्टी ही नहीं मिलती, जिससे
मिल सकूँ। आज समाचार आया
में पहुँच गई है। इसका अर्थ मैं
र के घाट उतार दिये गये होंगे।
पूर्व की ओर आने वाला था, तो
मुझको छोड़ती नहीं थी। यह
साधारण है। मुझको यहाँ लाने वाले
बलपूर्वक पकड़कर मुझसे पृथक्
के स्टेशन पर ले गए थे। उस समय
ना से भर रहा था और मुझको
नापूर्ण और देश-द्रोही प्रतीत हुआ
हैं तो मुझको उसकी याद हृदय में

या और उसने सहानुभूति प्रकट
ो याद आ गई और अनायास ही
। डोरिस ने समझा कि वे बन्दी
रहे हैं।
ट बात कर दी, "लोग सर्व दाते हैं
के लिए हर प्रकार का त्याग करना
न्तु धीरे-धीरे हम समझने लगे
[illegible] है कि यह राज्य [illegible]
[illegible] का राज्य है। हम सब [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] देश का [illegible] कर रहा है।
[illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible]
है

मे सन्देहात्मक व्यक्तियो की सूची तैयार की। हमने किंचित्-मात्र सन्देह वालो को भी उसमे सम्मिलित कर लिया। इसपर भी सूची एक लाख से ऊपर नही गई। जब वह सूची उच्च अधिकारियों को भेजी गई तो बहुत ही कड़ा उत्तर आया। उत्तर था, "हमको मालूम है कि ढाई लाख देश-द्रोही है। इनमे से एक भी कम नही। सूची पूरी की जाय। ऐसी अवस्था में जी० पी० यू० क्या करता ? इसने ढाई लाख की एक सूची बनाई और उस ढाई लाख को पहले पार्टी से निकाल दिया ग पीछे उनको लेबर-कैम्प्स मे भेज दिया गया। यह १९३७ का 'प कहाता है।

"इन ढाई लाख मे कम-से-कम दो लाख ऐसे थे, जो किसी प्रक भी दोषी नही कहे जा सकते थे।"

: ४ :

अन्त मे वह दिन आया, जब मजीद और कोटलवाल की सुध ल गई। उनको ब्लैडीवास्टक मे पहुँचे पांच मास से अधिक हो चुके थे। वे ब्रेकफास्ट ले रहे थे कि जी० पी० यू० का एक अधिकारी वहाँ आया और उनको यह आज्ञा सुना गया, "आपकी जांच के पत्र मास्को से आ गए हैं। इस कारण आपको मध्याह्न दो बजे, जी० पी० यू० कार्यालय मे पहुँचकर अपने विषय मे जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।"

कोटलवाल ने प्रसन्न हो पूछा, "मास्को से ? वहाँ हमारे विषय में कैसे समाचार गया ?"

"आपके विषय मे वहाँ लिख गया था। वहाँ से हिन्दुस्तान मे पूछ-गीछ की गई थी। हिन्दुस्तान से सूचना मास्को गई होगी, जिस पर आपके सम्बन्ध मे आज्ञा वहाँ से आ गई है।"

कोटलवाल ने अधिकारी का धन्यवाद किया, मानो यह सब परि-श्रम उसने ही किया है। मजीद चुपचाप बैठा रहा। वह मन मे विचार कर रहा था कि उसको क्या करना चाहिए। अधिकारी के चले जाने के पश्चात् बोरिस ने, जो मन से जी० पी० यू० के कामों से उचाट हो चुका था, मजीद और कोटलवाल से कहा, "आप दोनों ने मेरे साथ सहानुभूति प्रकट कर मेरे मन को बहुत शान्ति पहुँचाई है। इसका बदला चुकाने के लिए मैं अपने अनुभव के आधार पर एक-दो बातें आपको बताना चाहता हूँ।

"यह न समझें कि हमारा उच्च अधिकारी, जो आपसे भेंट करने आया है, आपसे सहानुभूति प्रकट करेगा। अथवा आपसे कोई अच्छी

कोटमरान के बाहर आने पर मजीद को भीतर बुलाया गया। अधिकारी ने मजीद को अपने सम्मुख बिठाकर पूछा, "तुम इंग्लि
ग्रोर के मेम्बर हो ?"

"हाँ।"

"कितने वर्ष इंग्लैण्ड में रहे हो ?"

"पाँच वर्ष।"

"इंग्लैण्ड कैसा देश है ?"

मजीद के मन में आया कि वह कह दे कि ब्लैडीवास्टक उसके मुकाबले नरक-कुण्ड है, परन्तु बोरिस की बात स्मरण कर बोला, "संसार में नरक से कम नहीं। वहाँ निर्धनता के कारण हर प्रकार के अपराध और पाप खुले बाज़ार होते हैं।"

"वहाँ की औरतों के विषय में आप क्या जानते हो ?"

"मैं हिन्दुस्तानी होने के कारण, विवाह के बिना किसी औरत को छूना भी पाप समझता हूँ। इसी कारण बच गया था, अन्यथा वहाँ रईसों की लड़कियाँ, धन देकर भोग कराती हैं।"

अधिकारी हँस पड़ा। फिर पूछने लगा, "तुम हिन्दुस्तान में एक धनी बाप के बेटे हो ?"

"हाँ, परन्तु मेरे बाप ने मरने पर अपनी सब जायदाद मेरी माँ के नाम लिख दी थी। मुझको एक पाई नहीं मिली।"

"तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिए दो सौ अंग्रेजी पौंड भेजे हैं।"

मजीद अन्यमनस्क भाव में बैठा रहा। इसपर अधिकारी ने पूछा, "तुम क्या कर सकते हो ?"

"मैं 'स्कालर' हूँ। कोई भी लिखने-पढ़ने का काम कर सकूँगा।"

"तुम्हारे लिए आज्ञा मिली है कि तुमको सोवियत यूनियन का नागरिक माना जाता है और बाकू में 'आयल रिफाइनरी' में हेडक्लर्क बनाकर भेजा जाता है।"

"मैं सोवियत सरकार का कृतज्ञ हूँ। मैं जी-जान लगाकर इस देश की जो अब मेरा है, सेवा करूँगा।"

"अब तुम जाकर तैयार हो जाओ। तुमको अस्तराखान भेजा जा रहा है। गाड़ी पाँच बजे छूटती है।"

बोरिस इनको वापस निवास स्थान पर ले आया और इनसे कहने लगा कि उसको भी आज्ञा हुई है कि वह यूक्रेन में कलेक्टिव फार्मज़ पर काम करने जाये। उसको आज्ञा-पत्र मिल गया है। वह बोटलवाल के

र्चित्र थी। उसके मन मे यह विश्वास
होते ही रूस का बन्दी बन गया है
हा है।

. ऋतु मे ग्रासपास ग्रंधेरा रहता है।
ं का प्रकाश था, वह भी इस समय
टेशन से निकली तो ऐसा प्रतीत हुग्रा
है। डालिन ने डिब्बे की खिडकियां के
बर्फीली वायु भीतर न ग्रा सके। डिब्बे
लैम्प से हो रहा था। मजीद के कमरे
रेलगाडी मे यात्रा करने वाले यात्री
ो देखकर वहाँ ग्राकर बैठने का कोई
यह हुग्रा कि मजीद ग्रौर उसका सर-

त्रात् गाडी ठहरी। एक बहुत ही साधा-
लिए रेलगाडी के साथ की केन्टीन से
मजीद, उस भोजन से भी, जो ब्रैंडी-
ा था, सन्तुष्ट नही था ग्रौर रेलगाडी
ा। काली रोटी थी, जिसमे से एक
। मांस की, जो न तो घोडे का प्रतीत
ट रोटी के साथ खाई ग्रौर बस। साथ
वोदका का एक जग।

ना कठिन हो रहा था, परन्तु यह जान
हो नही सकता, चुप था। उसने डालिन
मल सकता है क्या?
ों है।"

सने उसके मन को उस पथ से एकदम
राही दस-बारह वर्ष से था। वह समझ
टिया खाना भी इसी कारण मिला है
रकार का काम करने के लिए ग्रवैतनिक
रता था कि ऐसा क्यों किया गया है।
नही बिगाड़ा था। इस समय
, जो दोरिस ने उसे बनाई थी,
कँपकँपी होने लगी।

रिस्थिति बदली। फौजियों के
तु मचे बूट नहीं मिल रहे थे।
नहीं थे। कम्बल पुराने होने से
और पहले रोटी घटिया मिलने
म पाके हान लगे। पश्चात् सेना

, नगरों और देहातों की बातें
युद्ध पैसे वालों की आय बढाने
मेरी बात समझ आने लगी।
, नहीं करेंगे। बस फिर क्या था,
मट के सिपाहियों को वेतन नहीं
ो ओर मार्च कर दिया। मास्को
सको भी एक मास से वेतन नहीं
व वह पुलिस हमको ज़ार के महल
न नारे लगाये, 'हमारा वेतन दो'
ारा विरोध करने के स्थान हमारे

लोग, जो जनता से कहते थे कि वे
नेता बन गये और फिर सरकारी
ा को लूटने के लोभ में, इन नेताओं
धनियों को लूटा। नई सरकार से
ा वेतन मांगा। सरकार के पास धन
ने कहा, 'जनता का धन धनियों के

ग देहातों की ओर चल पडे। समूची-
अपना वेतन वसूल करते हुये जाने
रईसों के घर लूटे। उनकी स्त्रियों को
ा मौत के घाट उतार दिया।
मुझको सोवियत सेना में नौकरी मिल
ा तो मुझको सेना से पेंशन दे दी गई
न में सक्रिय भाग के कारण, जो॰ पी॰

र ही रहा था कि मजीद को नीद

उसके कम्बल शरीर की गरमी से गरम हो गये थे और वह सो
में सुख अनुभव करने लगा था।
जब डालिन को समझ आई कि मजीद सो रहा है, तो उसने मजीद
के पर जोर से हाथ मारकर जगाया। मजीद को बहुत बुरा प्रतीत
परन्तु जब डालिन ने कहा कि बिना वोडका पिये सोयेगा तो रात
से जकड जायेगा। मजीद उठ बैठा और थोडी वोडका पीने लगा।
द ने एक घूंट पी तो डालिन ने चार घूंट ले ली। इससे डालिन का
और तीव्र हो गया और वह खूब खुलकर बातें करने लगा। डालिन
या, "मेरा विवाह एक भले घर की लडकी से हुआ था। रिवो-
न मे मुझसे नाराज हो, वह मुझको छोड गई। उसको मेरा रईसों
न-चुनकर मारते फिरना पसन्द नही था।
"मेरे साथियो को सन्देह हो गया कि मेरी स्त्री ह्वाइट-सेना की
ता कर रही है। उन्होंने उसको पकड लिया और गाँव के चौराहे
फाँसी चढा दिया।"
मजीद कहानी का प्रवाह सुन काँप उठा। उसने पूछा, "यह तुम्हारी
ों के सामने हुआ था क्या?"
"हाँ," डालिन की आँखो से अश्रुधारा बह रही थी। उसने कहा,
उससे बहुत प्रेम था, परन्तु मैं उसको बचा नही सका। इसके
त् मैंने अपनी रेजिमेंट का, जो अपना वेतन लूट के माल से वसूल
भी लूट मे लगी थी, साथ छोड दिया। मैं मास्को चला गया और
इक्कीस मे मुझको सोवियत सेना मे नौकरी मिल गई।"
डालिन जेब से रूमाल निकाल अपनी आँखें पोछने लगा। मजीद
न मे विचार आ रहा था कि रिवोल्यूशन में क्या और भी निर्दोष
गये थे? इसका उत्तर डालिन ने अपने आप ही देना आरम्भ कर
।
"मास्को में भी एक बार जब जनता में युद्ध में भगदड़ मच गया, तो वे
के लिए पैसे वालों को लूटने लगी। लेनिन ने इस लूट-खसोट में
दखल नहीं दिया। इस पर भी लूटने वालों को रोका नहीं। लोग
ों के लूटने के बाद सौदागरों को लूटने लगे और जब वे भी
प्त हो गये तो साधारण पढ़े-लिखे लोगों को लूटने लगे। इससे धन
कुछ अधिक प्राप्त नहीं होता था, परन्तु वे प्राय: मार डाले जाते
।"

रन्तु मार्ग मे दो दिन तक बहुत
ााडी कागास्क स्टेशन पर खडी
.फ से ढक गई थी। इसको साफ
छ दिन के स्थान यात्रा मे दस

ाद के डिब्बे मे घुसने नही दिया
र्शन हुए। जब गाडी कागास्क
ो तो मजीद ने डालिन से कहा,
क्यो नही दिया जाता ?"
वह अब हमारी गाडी मे यात्रा
मजीद को बहुत शोक हुआ, परन्तु
पर एक दिन वह अपने डिब्बे की
डालिन वोडका पीकर मस्त लेटा
तर भांककर देखा। मजीद ने उस
डिब्बे के लैम्प के धीमे प्रकाश मे
र भी कोई जाना-बूझा मुख प्रतीत
ा कि भीतर के यात्री उसकी ओर

क यह कौन हो सकता है। उसको
न दिन पीछे गाडी बदलनी पडी।
वल और बिस्तर उठाये हुए प्लेट-
बैठे। इस गाडी मे भीड अधिक थी
को एकान्त डिब्बा नही मिल सका।
र रखा ही था कि एक और यात्री
सामने सीट पर बैठ गया। ज्यो ही
ा। यह ऐना थी। एक क्षण के लिए
लिन अपने कम्बल सीट पर रख
ना की ओर थी। ऐना ने देखा और
र रहने का सकेत कर दिया। मजीद
ा जिसको देखा था, वह ऐना ही थी।
उसी के साथ यात्रा कर रही है। क
ा परिचय प्रकट करे। क्यो ?

वेचार करने के लिए एक विषय और मिल गया।

डालिन ने बिस्तर ठीक कर लिया था और अपनी सीट पर, जो मजीद के साथ की थी, बैठ गया था। ऐना उसके सामने बैठी थी। डालिन कितनी ही देर ऐना की ओर देखता रहा। ऐना ने उसकी ओर ही देखा और इस समय वह खिड़की में से बाहर को देखती रही। डालिन ने मजीद के समीप हो कहा, "उस औरत को देखा है तुमने?"

मजीद ने चौंककर उत्तर दिया, "किसको?"

"वह जो सामने की सीट पर बैठी है।"

"क्या है उसको?"

"बहुत सुन्दर है। यदि मैं जवान होता तो···।"

मजीद मुस्कराया और चुप कर रहा। डालिन ने कहा, "मेरी इच्छा होती है कि मैं पता करूँ कि वह कहाँ जा रही है।"

"कीजिये।"

"मैं बाहर जाकर टिकट-चैकर से इसका टिकट देखने को कहता हूँ।"

"देखिये अथवा स्वयं ही इससे बातचीत करने लग जाइये। है क्या? एक औरत ही तो है।"

डालिन हँस पड़ा। दोनों को ब्लैडीवास्टक से चले हुए आठ दिन हो चुके थे और इस लम्बी यात्रा में दोनों में एक भारी सीमा तक मेल-भाव मिल चुका था। रेल के डिब्बे में कुछ और लोग भी थे, इस कारण डालिन के बाहर चले जाने पर भी ऐना ने मजीद से बात करने का यत्न नहीं किया।

दो मिनट पीछे स्टेशन-स्टाफ का एक आदमी आया और ऐना का टिकट देखने लगा। ऐना ने अपने कागजात दिखाये, जिसपर सन्तोष प्रकट कर वह चला गया। कुछ समय पश्चात् डालिन मुख पर सन्तोष की मुद्रा लिये हुए आकर, अपनी सीट पर बैठ गया। ऐना, जो टिकट चैक करने वाले के चले जाने पर मुस्करा रही थी, डालिन के आने पर खिलखिलाकर हँस पड़ी। डालिन विस्मय में उसके मुखपर देखने लगा तो वह गम्भीर हो डालिन से रूसी भाषा में पूछने लगी, "दैदूश्का (बाबा)? तुम जी० पी० यू० में हो?"

डालिन बाबा कहे जाने से मज्जा अनुभव करने लगा। फिर पूछने लगा, "क्यों? किसलिए पूछती हो 'डॉनि' (बेटी)?"

ऐना का विचार था कि मजीद अभी भी रूसी भाषा नहीं समझता।

त्युत् कुछ-कुछ बोलने भी लगा
। ऐना ने कहा, "मेरा एक पति
स्थान पर होता, तो ठीक वैसा

मैं कहाँ से आ रही हूँ और कहाँ
। कष्ट दिया।"
भावित तो हुआ, परन्तु वह मन में
। परिचय और बातचीत हो गई।
उसने पूछा, "तुम्हारे पति का

जानता हूँ। मैं भी व्लैडीवास्टक से

। देखा।"
कोलाई कहाँ है ?"
वह स्वीकार हो गया है।"
ह तो बहुत ही भला आदमी है।"
बात बदलने के लिये उसने पूछ

सको रूसी नागरिकता मिल गई
।"
इसके साथ उसने एक मर्म-भरी

उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि ऐना
डालिन ने पुनः ध्यान उसके पति
ी रहने वाली हो ?"
हूँ, परन्तु कॉमरेड निकोलाई
र इलाके में कलैक्टिव फार्म चलाने
। मैं विवाह के लिए राजी हो गई।
भेज दिया गया। यहाँ मैं उसके
ा मेरी वफादारी पर संदेह करता
ारचय कर लिया। वह प्रत्यक्ष

'कीव' में है।"

"क्या करता है?"

"जो कुछ आपके महकमे में काम करते हैं। उनके कीव चले जाने के पश्चात् मैं कुछ मास व्लैडीवास्टक में रही। अब मैं छुट्टी लेकर, अपने माता-पिता के पास, जो अस्तरखान में रहते हैं, जा रही हूं।"

गाड़ी चल पड़ी। वहां से तीन दिन का रास्ता था। तीन दिन में ऐना डालिन से भली-भाँति हिल-मिल गई। मजीद से भी बातचीत कर लेती थी। समय पाकर उसने मजीद को बताया कि उस रात थियेटर से लौटकर वह निकोलाई के घर नहीं गई। एक होटल में चली गई थी और अगले दिन उसने निकोलाई से तलाक के लिये प्रार्थना-पत्र दे दिया था।

निकोलाई ने जी० पी० यू० के काम से अगले दिन ही छुट्टी ले ली थी और तलाक की डिग्री होते ही कीव चला गया था।

मजीद को ऐना एक अच्छी-खासी सुन्दर लड़की मालूम होती थी और अब अपने को उसके तलाक में कारण मान, वह अपने पर गर्व करने लगा था। ऐना ने यह भी बताया कि अस्तरखान में जाकर उस पर से यह देखभाल उठ जायगी और वह बहुत प्रसन्न होगी यदि वह उससे, उसके माता-पिता के घर मिलने जाएगा।

मजीद ने ऐना का पता लिख लिया। अस्तरखान के रेलवे स्टेशन [illegible] "डूशका! मेरे पिता होंगी।"

: ७ :

व्लैडीवास्टक और साइबेरिया के अन्य नगरों से अस्तरखान अधिक प्रकाशमय और गरम नगर था। वहां के लोग अधिक सुन्दर और मिलनसार थे। प्राय मुसलमान थे परन्तु नवयुवक और युवतियाँ यूरोपियन ढंग की पोशाक पहनती थी। खुले बाजार, ऊँची इमारतें और बड़े-बड़े पार्क यहाँ बहुत थे। अस्तरखान मे पेट्रोल साफ करने का बहुत बड़ा कारखाना था। बाकू के पहाड़ो से जितना पेट्रोल निकलता था, सब अस्तरखान मे लाकर साफ किया जाता था। इस तेल साफ करने के कारखाने में पचास हजार से ऊपर मजदूर काम करते थे।

डालिन मजीद को लेकर इस कारखाने के जनरल मैनेजर के पास जा पहुँचा। वहाँ उसके पास मास्को से इसके पहुँचने की सूचना आई हुई थी। इस कारण डालिन द्वारा दी हुई चिट्ठी पढ़ते ही मैनेजर ने

मे बातचीत करना आरम्भ कर
मुझको यह जानकर बहुत प्रसन्नता
स्य हैं। मैं आपका यहाँ स्वागत
आई है कि आप यहाँ हैड-क्लर्क के
ने लिख दिया है कि असिस्टेंट मैने-
वार के सदस्य होने के कारण इस

या, इस पर भी मैं उम्मीद करता हूँ
ायेंगे।"
ट मामानी बेग ने मजीद को अभी
ण दे दिया और डालिन को एक

से कुछ दूर एक विशाल बँगला था।
तक के लिए एक कमरा दे दिया
की स्वीकृति नहीं आ जाती और
ाता।
कर घर लाया और श्रीमती ऐलिस
परिचय करा दिया। मजीद बेग
गया कि उनके शरीर में ईरानियों
ों कैंट की रहने वाली अंग्रेज़ी महिला
ह भी बताया था, "इनको यहाँ लाने
की चिट्ठी-पत्री करनी पड़ी थी।
पर अविश्वास रखता है और सम-
र न रखा गया तो अन्य षड्यन्त्र-
।"
, जो अभी सोलह-सत्रह वर्ष की थी,
ची-सी प्रतीत होती थी और अभी
र्मीली होने से और बड़ी का आदर
ड़की ही कही जा सकती थी।
पने को, ऐसे अच्छे परिवार में पहुँच
ात खाने के पश्चात् बेग और मजीद
ौर क्स और मास्को पर आ पहुँची।
े में एम० एस-सी० कर पेट्रोल टैक-
२

ोजोजी का विशेष अध्ययन किया। इस विषय की डिग्री मुझको सन्
१६१६ में मिली। यहाँ से मुझको ईरान में ब्रिटिश ऑयल कम्पनी में
ौकरी मिल गई। परन्तु जब मैं अबादान में पहुँचा तो रूसी सरकार के
एजेंट अपने बाकू के तेल की रिफाइनरी के लिए टेकनिकल स्टाफ की
भर्ती कर रहे थे। मैं अफ़गानिस्तान का रहने वाला था। इस कारण वे मेरे
ास पहुँचे। मैं स्वयं सोशलिस्ट विचार रखता था और मैंने अपने देश
ो सेवा पसन्द की। ब्रिटिश आयल कम्पनी का काम छोड़ १६२३ में मैं
हाँ आ गया, परन्तु मेरी पत्नी ऐलिस को दो वर्ष तक ईरान में रहकर
हाँ मेरे पास आने की स्वीकृति की प्रतीक्षा करनी पड़ी।

"यहाँ का प्रबन्ध देखा तो अब मुझको यहाँ आने पर शोक प्रतीत
ोता है। मैंने दिन-रात मेहनत कर बहुत सी मशीनरी अमेरिका और
टली से मँगवाकर लगवाई और सन् छब्बीस में तेल की नदियाँ बहानी
ारम्भ कर दी। इस पर भी लेनिन प्राइज़ एक नीपर पर बन्द बनाने
ाले युवक इनजानीम को मिला है। खैर छोड़िए इस बात को। तुम
ताओ, तुम क्यों इस देश में आये हो? मुझको तो ऐसा विदित था कि
हिन्दुस्तान में पढ़े-लिखे युवकों के लिए बहुत धन्धा है।"

"मैं इंग्लैण्ड में ही था, जब मुझको कम्युनिस्ट-साहित्य पढ़ने का
[illegible] ...मा और
...न्ध बन
...अपराध
...स्ट-पार्टी
...म झूठे
ासपोर्टों का आश्रय ले, जापान और जापान से कोरिया और कोरिया
े व्लैडीवास्टक पहुँचा दिये गए। वहाँ पाँच मास से अधिक काल तक
लगभग बन्दी की अवस्था में रहे। अब मेरे साथी को यूक्रेन में किसी
संयुक्त फार्म पर भेज दिया गया है और मुझको यहाँ।"

"यदि मैं अबादान में एक साधारण इंजीनियर के रूप में भी काम
करता तो पाँच सहस्र पौण्ड वार्षिक वेतन पाता। यहाँ मेरा वेतन पाँच
ौ रूबल मासिक है। उस हिसाब से मैं चार हज़ार दो सौ रूबल मासिक
ाता होता। वहाँ का जनरल मैनेजर दस हज़ार के बराबर वेतन पाता
है।"

"यह तो होता ही है।" मजीद बोला, "पूँजीपति देशों में मेहनत-
मज़दूरी करने वालों को वेतन कम मिलता है और अफ़सरों तथा मालिकों

के होने पर भी हर प्रकार का लाभ, मान और प्रतिष्ठा उनको मिलती थी, जो पार्टी के सदस्य थे। अन्त में मैंने पार्टी की सदस्यता के लिए प्रार्थना कर दी। एक वर्ष की परीक्षा के पश्चात् मुझको पार्टी का सदस्य बनाया गया। उसमें भी मुझको पार्टी के नेताओं की बहुत मिन्नत-खुशामद करनी पड़ी।

"इस कारण उन्नति, मान-प्रतिष्ठा पार्टी के सदस्य होने पर होती है और कर्मचारी दिन-भर पार्टी के हेर-फेर में लगे रहते हैं। काम गौण हो जाता है।"

"पर कॉमरेड बेग, एक बात तो आप भी मानेंगे। जब जनता के मन में यह बात बैठ जाती है कि राज्य उनका है, कारखाना, कम्पनियाँ और सब कारोबार उनके हैं, तब जितनी लगन से वह देश के लिए कार्य करती है, उतनी लगन पूँजीपति देशों की जनता में नहीं हो सकती।"

"यह तो ठीक है, परन्तु जब लोगों को यह पता चलेगा कि पार्टी के सदस्यों के अतिरिक्त अन्य कोई भी लाभ का भागीदार नहीं, तो वही लगन उल्टी होकर देश का सत्यानाश कर देगी।"

"पर यह ऐसा क्यों किया जा रहा है? पार्टी के सदस्यों के अतिरिक्त सब देशवासियों के साथ समान व्यवहार क्यों नहीं किया जाता?"

"जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ, इसमें मानव-मन का स्वार्थमय स्वभाव ही कारण है। जब तक मनुष्य अधिकार प्राप्त नहीं कर पाता, जब तक वह दया, उदारता, समानता इत्यादि श्रेष्ठ भावनाओं की डुग्गी पीटता रहता है, परन्तु जब वह अधिकारी बन जाता है। तब वह ऐसा प्रपञ्च करने लगता है कि उसका अधिकार कोई दूसरा छीन न सके। यहाँ बोलशिविक पार्टी ही एक पार्टी रह सकती है, जिसका विधान इस मानव-त्रुटि का सूचक है।

"स्टालिन ने १९३५ का विधान बनवाया। उनमें राज्य का सर्वोच्च अधिकारी बोलशिविक पार्टी का प्रथम मन्त्री नियत किया और वह जीवन-भर बदला नहीं जा सकता। स्टालिन वह प्रथम मन्त्री है। वही राज्य का सर्वोच्च अधिकारी है और वही बदला नहीं जा सकता। यह उसके अपने बनाये विधान के अनुसार ही ऐसा है। सेना और पुलिस में केवल बोलशिविक पार्टी के सदस्य ही लिए जाएँगे, अर्थात् राज्य इस पार्टी की अर्थात् इस पार्टी के नेताओं की जागीर हो गई है।

"यह है उस मानव-विकार का परिणाम। जब तक कोई भिखारी ... माँगता है। जब वह कुछ धन जमा कर लेता है, तो

, लिए हर प्रकार का यत्न करता
है। उस भावना का घोर अनु-

के पर्ज की कथा सुनी थी, विस्मय
लन-जैसा नेता जनता के ढाई लाख
जा दे सकता है। यह आज मिस्टर
लगा था। और ऐसी परिस्थिति के
ा ध्यान कर, वह कांप उठा। वह
क्सिज्म है ? क्या इसी के लिए वह
रिक सुख त्यागकर जीवन की आहुति

ऐसा व्यक्ति नहीं," मजीद ने मिस्टर
नाशाही की निन्दा कर सके ? '
इसके होने को जानता है और वह
नने से पूर्व ही 'पर्ज' कर दिया जाना
अन्तिम प्रामेट है।'
ाया जा रहा है कि रूस में यह लौह-
यह लेबर कैम्प्स और बुलुक्स के साथ
परिस्थिति के कारण है। परिस्थिति
हो जायगी।"
डम्बर है। वास्तव में कार्ल मार्क्स के
र असफल सिद्ध हुए हैं। पहली बात तो
ष्ट करने के लिए कम्युनिज्म को जन्म
वय उत्पन्न कर रही है। अन्तर केवल
थे, वे मिटाकर नये जागीरदार, बोल-
। इनकी जागीर भूमि और मकान
मि और मकान अपने मालिकों की मुल-
म पार्टी के नेताओं की नेतागिरी, इनके
। जैसे ज़ार के काल में एक जागीरदार
था, जो उसकी जागीर को नष्ट करना
नेता, जो एक बार नेता बन गए, अपने
ते हैं।"

मजीद के विषय में आशा आई कि उसको हैडक्लर्क ही रखा जाए। इस काल में मजीद कॉमरेड बेग की कोठी में रहा और कुछ ही दिनों में वह बेग के परिवार के सब सदस्यों से हिल-मिल गया। बेग की लड़की शीरीं और उसकी पत्नी ऐलिस मजीद के सम्पर्क में सबसे अधिक आ रही थीं। यह स्वाभाविक ही था। घर का सब प्रबन्ध इनके हाथ में था।

ऐलिस भी ऑक्सफोर्ड की ग्रेजुएट थी और बेग से इंग्लैंड में ही सम्बन्ध में आई थी। जब बेग ब्रिटिश ऑयल कम्पनी में नौकरी पर गया तो ऐलिस से विवाह हो गया और सन् १६२१ में ही शीरीं का जन्म हुआ।

ऐलिस प्रेम-पाश में बद्ध अपने पति के पास रहती थी, अन्यथा राजनीतिक विचार से तो वह अपना दम घुटता पाती थी। बेग के कहने पर भी वह बोलशिविक पार्टी की सदस्या नहीं बनी। सन् १६२३ और २४ के विरोधी दल के नेताओं की हत्याओं का वृत्तान्त पढ तो वह इस पार्टी से घृणा करने लगी थी। सन् १६३५ में हुए 'पर्ज' में ढाई लाख जनता की वास्तविक हत्या का वृत्तान्त पढ और गुप्त मुकद्दमों की बातें सुन वह अपने पति से कई बार कह चुकी थी कि वे पुन इंग्लैंड चले-चलें तो बहुत अच्छा रहे। परन्तु बेग का कहना था जब वे किसी का विरोध नहीं करते और अपने काम को ईमानदारी से करते हैं तो उनके लिए डरने का कारण नहीं है।

ऐलिस बेग से अधिक सतर्क थी और वह किसी से भी राजनीति पर बात नहीं करती थी। परन्तु मजीद के विषय में उसके मन में विश्वास-सा बैठ गया था। इसका कारण मजीद का, इनके साथ अपने परिवार के विषय में खुलकर बातें करना था। साथ ही शीरीं मजीद से प्रभावित हो रही थी और उसकी माँ इस बात को अनुभव कर रही थी।

मजीद की आँखों में कुछ ऐसी बात थी कि स्त्रियाँ उस पर विश्वास करती ही थीं। इस कारण जब एक बार मन की धारणाएँ प्रकट हुईं तो फिर होती चली गईं। मुख्य कर्मचारी के रूप में मजीद कारखाने में काम करता था और उसका काम करने का समय प्राय· मध्याह्न पश्चात् से साय दस बजे तक होता था। इस कारण उसका प्रात· का समय, जब कॉमरेड बेग कारखाने में जाता था, घर पर व्यतीत होता था। .ात. की बेग की चाय तो कारखाने में उसकी पत्नी ले जाती थी और ीरी मजीद की चाय का प्रबन्ध करती थी।

मध्याह्न का भोजन मजीद ऐलिस के साथ करता था। शीरीं उस

ाना था, जब ऐलिस से सुनकर

य मे प्रकाश हो रहा था। जहाँ
' के लिए कोई विशेष रुचि की
ा कि शासन तो शासन ही होता
देख चुका था। अन्तर यह था
ा पर ऐसे राज्य करती थी,
तो कम्युनिज्म की सिद्धान्ता-
ेन मजीद ने कहा, "क्या यह
न पार्टी मे भरती हो जायें ?"
जो बात मैं अपने हृदय मे ठीक
ाना करना धोखेबाजी है। जहाँ
, कर लेना है, वहाँ धोखा-देही
ी।"

ीं महायक जो हो सकती है।"
ा नहीं बचा सकती तो किसी अन्य
कॉमरेड मजीद, कम्युनिज्म तो
र्स का विचार था कि कम्युनिज्म
सकी आवश्यकताएँ पूर्ण होने ही
र अन्त मे उसका विचार था कि
। कम्युनिज्म के प्रचार मे इन
ई और न होती दिखाई देती है।
? और इस बात मे मैंने यहाँ की
से दूर जाते देखा है। इसका
ातों के सिद्धान्त असत्य, अव्या-

र नहीं कि रूस के अधीन रूस मे

। है इस कारण उनके विषय मे
र्षों मे जनता को दिन-प्रतिदिन
होते देखा है। यह सम्भव है कि
ार्टी यहाँ आ गया हो, परन्तु
ीन और विश्व-मोहक होगी

ोर दूसरा उसको पतन की ओर
. कह दिया कि आगामी मास
आ उसको चाहिए वह पा चुकी

ी है कि शीरी ऐसे विचारों को

उसको तो वह अब भी पा चुकी
। तो उसका अपनी इन्द्रियों पर
यही है।"
। वह अभी आयु में इतनी छोटी
रती। यह नियन्त्रण उन वेगों में
. है।"
कामरेड मजीद, तुम कभी-कभी
मैंने कब कहा है कि उसकी यह
भी-कभी क्रिकेट के मैच में पहली
म बुरी तरह पराजित हो जाती
,

तना था तो तभी ज्ञान हो सकता
रह अपने पति के प्रेम को भी पा

म मन की एक भावना है। इसका
ार से कोई सम्बन्ध नहीं। मान लो
ी परवाह नहीं करता। तो क्या
। पर प्रेम तो अप्रेम में बदल नहीं
ने पर अपना कार्य करता ही रहता

ता लगे कि शीरीं के प्रेम का भाजन
?"
है। तो भी इस अवस्था में भी वही
में होता है।"
नहीं प्रेम समझ बैठी है, यह भ्रम-

ान हो जायगा और भूल करने में

विरागी सदस्यों की सहायता से अपनी नेतागिरी चलाते हैं। ये जब भी जब किसी के विरुद्ध हो जाते हैं तो उसको मृत्यु-दण्ड दिलवाये बिना सांस नहीं लेते। नेता लोग इनको ना नहीं कर सकते। उनकी प्रतिष्ठा और रक्षा इनके हाथ में होती है। दो वर्ष हुए इस प्रकार नेता और मूर्ख सदस्यों ने आपस में मिलकर ढाई लाख लोगों को मौत के घाट उतार दिया था।

"ऐना बोलशिविक पार्टी में एक सदस्या है और पार्टी में उसका बहुत महत्व है। जहाँ उसकी सहायता तुमको लाभ पहुँचा सकती है वहाँ उससे ईर्ष्या और द्वेष रखने वाले तुमको हानि भी पहुँचा सकते हैं।

"इससे या तो शीघ्र उससे विवाह कर लो और उसको पार्टी के झंझट से बाहर ले जाओ, या उससे मेल-जोल बन्द कर दो।"

मजीद इस प्रकार सचेत किये जाने पर भौंचक्का हो देखता रह गया। वह कुछ कहने ही वाला था कि ऐना आ गई। वह अपने पिता और मजीद को इस प्रकार घुल-मिलकर बातें करते देख, दरवाज़े के समीप ही ठहर गई। मजीद ने उसको देखा तो उठकर उससे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा।

ऐना अब भीतर आ गई और दोनों ने एक-दूसरे का अभिवादन किया। पश्चात् ऐना ने अपने पिता की ओर घूमकर कहा, "डैडी, मम्मी से कह देना कि मैं रात का भोजन घर पर नहीं करूँगी।"

इतना कह वे दोनों बाँह-में-बाँह डालकर बाज़ार को चल दिये। इस समय एक दुर्घटना हो गई। सामने से ऐलिस और शीरीं आती दिखाई दीं। स्वाभाविक रूप से मजीद उनसे बात करने ठहर गया। ऐलिस ने पूछा, "आप किसी आवश्यक कार्य में व्यस्त हैं?"

"नहीं। क्यों, क्या बात है?"

'हम कुछ खरीदने जा रहे हैं और आप यदि साथ चल सकें तो ठीक रहेगा।"

मजीद ने ऐना से क्षमा माँगी और ऐलिस और शीरीं के साथ चल पड़ा। ऐना जल-भुनकर कोयला हो गई। वह वहाँ खड़ी मन में कुढ़ती हुई, मजीद को उनके साथ जाते देखती रही।

जब ऐलिस इत्यादि कुछ दूर निकल गये तो ऐलिस ने बताया, "म्यूनिच में हिटलर और चेम्बरलेन में समझौता हो गया है। इसके परिणामस्वरूप पश्चिमी यूरोप में पूँजीपतियों का गुट बन जायगा। इससे

पर मास्को में रिश्ते पर कि मजीद का [illegible] बदल
उसने पहले [illegible] पर गया। मैं इसका पर काम [illegible]
मास्को वालों [illegible] पार्टी कार्यालय में पूछा होता और पार्टी
में अवश्य कोई ऐसा भी है जो तुम्हारा विरोध करता है। मैं
जानता कि ऐसा कौन है परन्तु है अवश्य, अन्यथा निर्णय में इतनी
देर न लगता। कोई भूल पाया। इस पर लगाया गया है। उन्होंने
दुई डायरी और जाँच का परिणाम यह है कि तुम्हारे किसी [illegible]
पुन स्थान पर नियुक्त नहीं किया जा सकता। यहाँ पार्टी में विरोधी
बनी रहना तक उचित नहीं।"

मजीद को डॉ० एंड्री हेरिङ का कहना स्मरण हो आया। उन्होंने
कहा था कि ऐना पार्टी में भारी प्रतिष्ठा रखती है। या तो उसके विरुद्ध
कर दूँ या उससे मेल-जोल बन्द कर दूँ। डॉ० के इस संकेत करने वाले
बातों का स्मरण कर मजीद कांप उठा। उसने ऐना की पूर्ण कथा डॉ०
को सुना दी और फिर डॉ० के संकेत करने वाले शब्द भी सुनाये।
तदनन्तर कहा, "यहाँ की कोम्सोमोल पार्टी में वही मेरी परिचित है।"

"वह तुमसे विवाह करना चाहती है क्या ?"

"वह अवश्य इस प्रकार का विचार रखती होगी। वास्तव में वह मेरे पीछे-पीछे ही व्लेडीवास्टक से यहाँ आई है।"

"तो यदि शान्ति से रहना चाहते हो तो उससे विवाह कर लो।"

"मेरा ऐसा कभी भी विचार नहीं था और न ही अब है। व्लेडीवास्टक में मैं केवल विनोद के लिए उसको एक बार 'सुन्दर' कह बैठा था। इसके अतिरिक्त मैंने उसको कभी इस भावना से नहीं देखा।"

"तो मजीद, मेरी राय मानो। यहाँ से शीघ्रातिशीघ्र भाग जाओ, अन्यथा यहाँ के लक्षण कुछ अच्छे प्रतीत नहीं होते।"

"अजब मुसीबत है। मेरा चित्त यहाँ से जाने को नहीं करता और इस बदकार औरत के कारण मेरा यहाँ रहना कठिन हो रहा है।"

"तुम चले जाओ, मेरी यही राय है। मैं तुमको आज एक और बात बताता हूँ। तुर्किस्तान में और भी कोई है जो तुम्हारी जान के भय की बात सुन, रो-रोकर आँखें खराब कर रही है।"

"सत्य ?" उसको शीरी की आँखों के आँसू याद आ गए। "पर वह कौन है, कॉमरेड ?"

"देखो, किसी से कहना नहीं। शीरी तुमसे बहुत प्रेम करने लगी है। जब से उसने तुम्हारे विषय में मास्को वालों का विचार सुना है, वह

ाना और नहीं हो सकता था। इस कारण उसने पानी और
हाथी। उसने दो [illegible] घोड़े और एक पथ-प्रदर्शक का प्रबन्ध
किया। कैस्पियन सागर के किनारे-किनारे दक्षिण की ओर बस
हाँ से ऐसे पुल आते थे, जिन पर जाने से बिना दुर्घटना के [illegible]
सीमा से जाया जा सकता था। पथ-प्रदर्शक पाँच सौ रूबल पर [illegible]
मजीद को ले जाने के लिए तैयार हो गया। सब तैयारी पूरी ह
ने लगी।

नुसार को मध्याह्न के समय अस्पताल से तीनों को जाना था।
दर्शक के पास पहुँचा था। शीरीं और मजीद के लिए घोड़े
ने के लिये गए थे। पानी की बोतल और रोटी के डिब्बे के अति-
और कोई सामान नहीं रखा गया था।

ठीक दो बजे मध्याह्न के पश्चात घोड़े कोठी में लाये गए और
तथा मजीद सैर करने के बहाने कोठी से निकले और घोड़ों पर
ही वाले थे कि पुलिस के दो वैन, जिनमें एक दर्जन से ऊपर पुलिस
, कोठी में घुस आये और मजीद को घेरकर खड़े हो गए। पुलिस
धिकारी ने मजीद को वारंट दिखाया और उसको पुलिसवैन में
र ले गया।

ीरी बहुत ही यत्न से अपने को वश में रख सकी और पुलिस तथा
के चले जाने पर अचेत हो वहीं गिर पड़ी। बेग और ऐलिस उसे उठा
तर ले गये और सचेत करने लगे।

री बीमार हो गई और डॉक्टर ऐंडरी डेविड की चिकित्सा में
गई।

ा ने तुरन्त मास्को को मजीद के पकड़े जाने के विषय में लिखा
ाशा प्रकट की कि उसके मामले की जाँच की जायगी और उसके
य होगा।

री डेविड से शीरी की चिकित्सा कराने का एक उद्देश्य यह भी
सकी सहानुभूति प्राप्त कर, ऐना से मजीद को छुड़ाने का यत्न
य। इस प्रयोजन से एक दिन शीरी ने मजीद से प्रेम की बात
की ईर्ष्या से मजीद के विरुद्ध कार्रवाई करने की बात कह दी

ह!" डॉक्टर अवाक् मुख खड़ा रहा। बहुत देर तक विचार
र ने कहा, "शीरी, मैं जानता हूँ कि मजीद का दोष केवल यह
ह ऐना से विवाह करने के लिए तैयार नहीं हो सका, परन्तु

"मैंने पार्टी के सदस्यों से मिलकर पहले यह जानना ... कि ऐना के कौन-कौन शत्रु हैं। उनसे मिलकर मैंने अपनी कथा बताई। एक कॉमरेड विशिन्सकी, जो पहले भी मजीद के पक्ष में था, मेरी सहायता करने लिए तैयार हो गया है। उसने मेरे पासपोर्ट और मास्को में ठहरने का प्रबन्ध कर दिया है। साथ ही कॉमरेड मोलोतोव विदेश मन्त्री तथा कामरेड बेरिया, गुप्तचर-विभाग के उच्च अधिकारी के नाम पत्र भी दिये हैं। विशिन्सकी का कहना है कि उसकी इन दोनों से घनिष्ठ मित्रता है।"

शीरी की बात जब बेग ने सुनी तो उसने स्वयं साथ जाने का निश्चय कर लिया।

अपने काम से छुट्टी पा, वह शीरी को साथ ले मास्को जा पहुँचा। बेग का अपना भी कुछ परिचय था। उसने उस परिचय की सहायता से मजीद का पता करने का यत्न किया। इधर शीरी कॉमरेड मोलोतोव ...

... ने मोलोतोव ...

शीरी एक परिपत्र पहले ही तैयार करके ले गई थी। इसमें उसने मजीद के विषय में और ऐना द्वारा उसके विरोध का कारण लिखा और उसके बचाने में हस्तक्षेप के लिए प्रार्थना की थी। साथ ही उसने विशिन्सकी का पत्र मोलोतोव को दे दिया।

मोलोतोव जहाँ मजीद के मामले से प्रभावित हुआ वहाँ शीरी के सुन्दर मुख से भी मोहित हो गया। उसने इस मामले में सहायता का वचन दिया।

शीरी कामरेड बेरिया से भी मिली और वैसा ही परिपत्र उसे उसकी जानकारी के लिए भी दिया।

... करने का आदेश ... में शीरी ... दिया।

: ११ :

जैसे कोई हलुवा खाने जा रहा हो और वह एक ग्रास मुख में डालने ही वाला हो और ठीक उसी समय कोई उसके मुख पर थप्पड़ मार उसका हलुवा छीन ले और उसको नीम-सा कड़वा पदार्थ खाने को विवश करे, जो अवस्था उसके मन की होती है वैसी ही मजीद की हुई

फिर रूस-जैसे अनिश्चित भविष्य
न मे बैठ जाने पर मास्को की
ले जाए जाने का दुःख मजीद को
गया । उसको रात के बारह
सब खिड़कियाँ पूर्ण यात्रा मे बन्द
र से बन्द वैन मे बैठाकर, मास्को
मे ले जाया गया । वह तीव्र ज्वर
ल की गड़गड़ से ही यह पता
मे है । मोटर की घर्र-घर्र से
न मे, किसी नगर की सड़क पर
सुरंग मे से गुजरने के सर-सर के
, किसी इमारत के तहखाने मे है।
या। एक समय एक स्थान पर
उनके समीप बैठे कान्स्टेबलो ने
र निकाला। गाड़ी से बाहर निकल
या, जो चारों ओर से ढका हुआ
दरवाजे मे ले जाया गया, जो उस
वाजे पर पाँच-छः बन्दूकची खड़े थे।
था और मजीद को बाँह से पकड़-
ग मे धक्के देते हुए ले गये। उसमें
ग, जिससे मजीद देख रहा था कि
ाजा नही था। लगभग दो सौ पग
ी घूम गई थी। घूमते ही सामने
चढ़ने लगे। पचास-साठ सीढ़ियाँ
चे, जिसकी दोनो दीवारें और छत
वाजे की थी। पचास पग इस बरा-
गेर एक दरवाजा था, जो लोहे के
: पीछे दो सरक्षक बन्दूकें लिए खड़े
ले जाने वालो के वहाँ पहुँचने ही
र मजीद और उसको पकड़े हुए
हुए।
र पर पहुँचे, जो गोलाकार था और
रियाँ थीं। इनके दरवाजे भी लोहे

ीनपों के बने थे। उन कोठरियों में बन्दी भरे पड़े थे। मजीद
धारे देग, सब सीनपों के पीछे भा खड़े हुए और बिजली के प्र
न में, जो वहाँ था, उसको देखने लगे।
बारह नम्बर की कोठरी खोली गई और मजीद को उसमें धके
ा गया। बाहर से दरवाजा बन्द कर, उसे ताला लगा, सब लो
से चले गए। उस गोलाकार सेहन में, जिसके चारों ओर ये को
बनी थीं, एक संरक्षक खड़ा था। सेहन के ऊपर भी छत थी, जि
ई खिड़की अथवा रोशनदान नहीं था। कोठरियों में लैम्प नहीं थे,
ारण मजीद को भीतर जाकर ही पता चला कि कितनी बड़ी
ी है।
कोठरी छ फुट लम्बी, छ फुट चौड़ी प्रतीत होती थी और उसमें
आदमी पहले उपस्थित थे। नवां मजीद था। मजीद को भीतर
ा गया। वास्तव में यह कहना चाहिए कि उसको एक भरे हुये
ठूँसा गया था। जब खिड़की का दरवाजा बन्द कर कान्स्टेबल
ाए तो मजीद, जो कोठरी के साथियों के साथ अपने को बगलगीर
पा रहा था, यह जान चकित रह गया कि वह किसी प्रेमवश नहीं,
स्थानाभाव के कारण, उनसे बगलगीर किया जा रहा था। दूसरी
ो उसको अनुभव हुई, वह वहाँ पेशाब की तीव्र दुर्गन्ध थी। वह
सोचने लगा कि यह स्थान अस्थायी रूप में कुछ मिनटों अथवा
के लिए, उसको वहाँ ठहरने के लिये दिया गया है। वह अभी
कर ही रहा था कि उसकी कोठरी के साथियों ने उससे प्रश्न
ारम्भ कर दिये।
या नाम है ?"
जीद।"
हाँ से आ रहे हो ?"
स्तरखान से।"
ुम कोई विदेशी प्रतीत होते हो ?"
हिन्दुस्तान से भागा हुआ साथी हूँ। अब रूस का नागरिक

स अपराध में पकड़े गये हो ?"
ही जानता।"
न सोओगे कैसे ? यहाँ तो पहले ही हम सो नहीं सकते।"
म यहाँ सोते भी हो ?"

एक साथी ने उत्तर दिया, "इसकी आवश्यकता क्या है ? एक मैल के कीड़े को समय जानने में क्या प्रयोजन हो सकता है ?"

इस पर भी समय का ज्ञान रोटी बाँटने के समय होता था। इसका अभिप्राय यह होता था कि बारह घण्टे व्यतीत हो गये। इसीसे कुछ कैदी, अपने उस बन्दीगृह में लाये जाने के दिन गिन रहे थे। एक ने बताया, "मुझको यहाँ आये तीन मास हो गये हैं। पर अब तो अवस्था सहन से बाहर हो रही है।"

थे। स्थान केवल बैठने लायक था।

जब अँधेरे से आँखें परिचित हुई, तो मजीद ने देखा कि कोठरी के एक कोने में पेशाब-टट्टी के लिये स्थान बना था। सफाई और पीने के लिये एक ही घड़ा पानी का था और पानी लेने के लिये एक तामचीनी का जग पड़ा था।

सब अपने-अपने विचार में लीन थे और एक-दूसरे की चिन्ता नहीं कर रहे थे। मजीद इस चुप्पी को अति भयकर बात मान पूछने लगा, "क्या आप लोग इस प्रकार चुप बैठे, महीनों निकाल रहे हैं ?"

"हम सब अपनी-अपनी बातें बता चुके। अब किसी के पास कुछ बताने को नहीं। तुम बताओ कुछ बात।"

मजीद ने इस अँधेरे में समय व्यतीत करने के लिये अपना इतिहास बताना आरम्भ कर दिया। हिन्दुस्तान में कम्युनिस्ट-पार्टी और उसका काश्मीर में कार्य, मजीद ने बताया। उसने अनुभव किया कि वहाँ उपस्थित लोग इस बात में रुचि नहीं ले रहे हैं, इस कारण वह चुप कर गया। उसने टाँग लम्बी की तो वह एक सोये हुये बन्दी के सिर पर

[illegible]

यत्न करने लगा। एक के पैर पर उसका सिर गया और दूसरे के सिर पर उसकी टाँगें। वे प्रायः दो-दो तीन-तीन इकट्ठे लेट रहे थे। उनके कपड़े बदबू कर रहे थे, परन्तु पेशाब और टट्टी की बदबू से उनकी घ्राण-शक्ति लोप हो चुकी थी और वे अब कपड़ों की बदबू को

एक दूसरे ने कहा, "अब पाँच दिन से तो टट्टी-पेशाब भी बन्द है।"

सेहन के बाहर खडे एक सरक्षक को भेजा गया कि वह पूछकर आये कि क्या किया जाय। कोठरी, जिसमें से ये लोग बाहर आये थे, अति बदबू कर रही थी और मैला जहाँ-तहाँ बिखरा होने के कारण फर्श पर कीडे चल रहे थे।

मजीद और सरक्षक वही खडे चीफ की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके देखते-देखते बारह मे से, जो कोठरी मे से निकले थे, तीन और मर गये। एक निकला ही मरा हुआ था।

मजीद का मस्तिष्क यह सब-कुछ देख पागल हो रहा था। वह सोच रहा था कि इस चीफ को गोली से मार डाले। फिर विचार करता था कि इससे क्या होगा। यह साक्षात् नरक है। यहाँ से भाग जाना चाहिए। अपना काल्पनिक अपराध मान लेना चाहिए। कुछ भी हो, यहाँ रहना ठीक नही।

इस समय वही अधिकारी, जो मजीद से अपराध मानने के लिये कह रहा था, आया और बारह-के-बारह बन्दियो को भूमि पर लेटे हुये देख बोला, "जाओ डॉ० को बुलाओ और इनकी रिपोर्ट तैयार करो।"

पश्चात् मजीद की ओर देखकर बोला, "इसको इसी कोठरी में बन्द कर दो।"

मजीद ने तुरन्त कहा, "मैं अपराध स्वीकार करने के लिये तैयार हूँ।"

"ठीक है।"

"पर मुझको यहाँ से निकाला जाय, अभी निकाला जाय।"

चीफ ने सरक्षकों की ओर देखकर कहा, "इसको कार्यालय में ले जाओ।"

कार्यालय में मजीद को टाइप किये हुए तीन कागज दिखाये गए। तीनों पर एक ही बात लिखी थी। मजीद ने पढ़ा—

"मैं मजीद, हिन्दुस्तान से निर्वासित और रूस से भागकर आया हुआ, अब अफगानिस्तान का रहने वाला और [illegible] इंग्लिश-हिन्दुस्तानी सरकार का [illegible] स्वीकार करता हूँ कि मैं अंग्रेजी हुकूमत का [illegible] हूँ। मैं [illegible] को [illegible] पहुँचाने के विचार से रूस में आया और इस कारण [illegible] हिन्दुस्तानी के [illegible] और [illegible] अंग्रेजी [illegible] में भेज रहा था। मैं [illegible] के साथ [illegible] और

कपड़े फटे-पुराने और पाइप, जो वह अपने हाथ में लिए हुए था, वह पुराना प्रतीत होता था। उसने कुरसी पर बैठते हुए कहा, "मैंने प्रातः काल से चाय नहीं पी। इसलिए नहीं कि मेरे पास दाम नहीं, प्रत्युत् इस कारण कि मैं इस देश में निर्धन बना रहना ठीक समझता हूँ।"

बेग को स्मरण हो आया कि वह लन्दन में नहीं, प्रत्युत् रूस और मास्को में है। यह कहा जाता था कि मास्को में पूर्ण जनता की एक तिहाई गुप्तचर-विभाग से सम्बन्ध रखती है। वह स्वयं अति गुप्त काम से वहाँ आया हुआ था। इस कारण वह सतर्क हो गया और सावधानी से बोला, "मैं समझता हूँ कि आपकी नीति बहुत कठिन है।"

"पर आप मेरी नीति का अनुकरण नहीं करते। आपके वस्त्र देखकर मुझको ऐसा प्रतीत होता है कि आप ज़ार के ज़माने के ज़मींदार हैं।"

"मैं ज़मींदार कभी नहीं रहा। मैं सरकारी नौकर हूँ और नौकरी में होने के कारण, मुझको अच्छे कपड़े पहनने पड़ते हैं। साथ ही वेतन अच्छा मिलता है और धन जमा करने में लाभ नहीं समझता।"

"परन्तु आप बेकार भी तो हो सकते हैं। आप पर पुलिस का सन्देह भी हो सकता है। आपको अपनी जान बचाने के लिए भागना भी तो पड़ सकता है।"

"ऐसी परिस्थिति मेरे अपने किसी अपराध के कारण तो होगी नहीं। मैं अपराध करूँगा ही नहीं। इस पर भी यदि मेरे भाग्य में यह सब-कुछ बदा है, तो फिर मैं कर ही क्या सकता हूँ। मेरे किये दुःख और क्लेश मिटेगा नहीं।"

"आप क्रांतिकारी प्रतीत नहीं होते?"

इस समय चाय आ गई और वह वृद्ध महाशय प्याला उठा पीने लगा। बेग ने भी चाय पीते हुए कहा, "आज रूस में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं, जो क्रान्तिकारी न हो। किसी के पास विकास को चलाने के लिए अवकाश ही कहाँ है?"

"परन्तु कुछ लोग हैं, जो कौन्टर रैवोल्यूशनरी (क्रांति के विरोधी) कहे जाते हैं।"

"यह सब व्यर्थ की बात है। ए. बी को क्रांति का विरोधी कहता है और बी. ए को। वास्तव में दोनों-के-दोनों ही विरोधी नहीं हैं। दोनों एक-दूसरे की निन्दा इस शब्द से, इस कारण करते हैं कि जनता क्रांति

ा करते है। हम स्टालिन और
ोनो प्रति निर्दयी, स्वार्थी और

। अहसान मे दबी हुई हूँ। इसी
, मैं यहाँ रह गई हूँ और आपको
नाजी का नाम इसमे नही आना
के कामो मे विश्वास नही है।"
ाहिए।"
ै। वे अपने और मेरे भूषण बेच-
ै

:
डा हुआ, तो कैदियो को जहाज के
, पर खडा कर दिया गया। गणना
। रजिस्टर देखा गया और गिनती
हाज से किनारे पर उन्हे उतारा

, जिसके साथ उसका हाथ बँधा
का दाहिना दूसरे के बायें से बँधा
तो बातें करने लगे। मजीद ने कहा,
सहायता करेगा ?"
। इस समुद्र के मार्ग मे तो जाना
ा की यात्रा पैदल करनी पडेगी।"
रते मर जाना पसन्द करूँगा। यह
कतनी विचित्र बात है! मैंने कोई
नी लिखवा लिया है कि मैंने भारी
बनाकर इस बरफीली जगह पर भेज
मे नही की जाती और न हम सहन
भीतर छूट गया तो छूट गया, नहीं

विश्वास है कि हमको छुडाने का यत्न
। कैम्प मे से छूटकर गया था। उसने
त्र ही छूट जायेंगे।"
एक-एक टुकडा सबको पकडा दिया

गया और आज्ञा हुई कि कैदी रात से और पन्द्रह मिनट में काफिला कोलीमा की ओर चल देगा।

यह जुलाई का महीना था, परन्तु भूमि पर बरफ जम रही थी। यह बरफ कितनी गहरी होगी, कहा नहीं जा सकता। मनुष्य के इस देश में आने के पूर्व से बरफ जम रही है। गरमी की ऋतु में भी यह नहीं पिघलती।

इस बरफ पर पाँच सौ मील चलकर कोलीमा पहुँचना था। पैदल डेढ मास से ऊपर की यात्रा थी और एक मास के लिए खाने का सामान, काली रोटी, नमक-मिर्च और एक प्याला, जिसमें जल गरम कर लिया जा सके, सबको दे दिया गया।

साढ़े पाँच हजार आदमी चार-चार की पंक्तियों में कोलीमा की सड़क पर चल पड़े। सबको चमड़े के कपड़े दे दिये गए थे। उन कपड़ों में मुँह-सिर ढाँपे हुए वे छप-छप पाँवों के शब्द के साथ चले जा रहे थे। लगभग दस किलोमीटर नित्य चलना होता था। रात को चमड़े के कपड़ों में ही नंगी बरफ पर सोना पड़ता था।

पहले दस दिन तो निर्विघ्न समाप्त हो गये। ग्यारहवें दिन कठिनाई आरम्भ हुई। रात से ही बहुत वेग से वायु बहने लगी थी। रात को तो बन्दी तीन-तीन चार-चार इकट्ठे कम्बलों में सिकुड़कर पड़े रहे। प्रात:काल उनको चलने के लिए कहा गया तो उनके लिये चलना कठिन हो गया। भूमि पर खड़ा होना सम्भव नहीं था। वायु का वेग सौ मील प्रति घण्टे से कम नहीं था। खड़े होते ही वे वायु के साथ दक्षिण को बहा ले जाये जाते थे। इस समय भी दो-दो बन्दी परस्पर बँधे हुये थे और वायु के वेग से दो-दो के जोड़े खुले मैदान में बिखर गये। पंक्तियों में चलना असम्भव हो गया और सरक्षकों के लिये उनको रक्षा में रखना कठिन। इसपर इस काफिले के कमाण्डेण्ट ने खतरे का बिगुल बजा दिया और सब कैदियों को एक स्थान पर एकत्रित होने की आज्ञा दे दी गई। कैदियों ने इकट्ठे होने का यत्न आरम्भ कर दिया, परन्तु यह सुगम नहीं था। कुछ लोग, जो मार्ग से दूर भटक गये थे, उनपर सरक्षकों ने गोलियाँ चलाना आरम्भ कर दिया। जिस-जिसको गोली लगी वह वहीं घायल हो गिर पड़ा। बहुत से मारे गये।

मजीद और ग्रोमोव ने जब आज्ञा सुनी तो भूमि पर लेट गए और रेंग-रेंगकर मार्ग की ओर आने लगे। परिणाम यह हुआ कि वे न तो सड़क से दूर भटके और न ही उन पर गोली चलाई गई।

के गवर्नर ने काफिले के गवर्नर से पूछा भी कि इतने क्यों मर गए? उसने बताया कि ऋतु बहुत खराब थी, आँधी, वर्षा और फिर सेना नदी में बाढ़ आने लोगों को बहाकर ले गई। गवर्नर काम करने वालों की कमी से बहुत कठिनाई में था। इस कारण उसने एक लम्बे पत्र में यहाँ कि कठिनाइयाँ, यहाँ पर चिकित्सकों के अभाव और भोजन की दुर्व्यवस्था का उल्लेख करके अधिक काम करने वाले माँगे।

मजीद और ग्रोमोव अपने काफिले से पाँच दिन पीछे पहुँचे। पहुँचते ही उनकी डॉक्टरी परीक्षा करवाई गई। डॉक्टर ने माँस का शोरबा देने का विधान कर दिया।

इससे दोनों में बल आने लगा। बल आने के साथ ज्वर चला गया और उनके पाँव, जो निरन्तर पैंतीस दिन तक चमड़े के बूटों में बन्द रहने के कारण गल गये थे, ठीक होने लगे। दिन-प्रतिदिन मृत्यु-संख्या बढ़ने के कारण गवर्नर को चिन्ता लग रही थी कि कहीं काम ही बन्द न हो जाय।

: १६ :

कोलीमा के मुख्य स्थान पर तो अब तक पक्की इमारतें बन गई थीं। उनमें अफसर लोग और लकड़ी के छाजनों में बन्दी लोग रहते थे। कोलीमा को चारों ओर काँटेदार तारों के घेरे से लपेटा हुआ था। इस घेरे के बाहर प्रति सौ पग के अन्तर पर एक संरक्षक रहता था। दिन और रात में संरक्षक बदले जाते थे। अफसरों और संरक्षकों को रहने को पक्का मकान और खाने को मांस-रस तथा सफेद रोटी मिलती थी और बन्दियों को काले आटे की रोटी, नमक-मिर्च और गरम चाय मिलती थी। मात्रा से तो भोजन मात्रा और प्रकार से अच्छा था। इस पर भी परिश्रम करने वाले के लिये पर्याप्त नहीं था। इस कारण बन्दियों को अपने समय की कैद भुगतने के पहले ही संसार से छुटकारा मिल जाता था।

मजीद और ग्रोमोव इस समस्या को समझते थे। ग्रोमोव को लॅबरोस्की ने सब बातें बता दी थीं और उसको यह भी बता दिया था कि संरक्षकों को प्रसन्न रखने से वे अच्छा भोजन प्राप्त कर सकेंगे। ऐसा करना आवश्यक था। उनको भागने के लिए अवसर मिलने पर अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करना था।

मजीद ने तो गवर्नर से मिलकर, अपने पढ़े-लिखे होने [illegible] परिचय दिया और कहा कि यदि आधे समय खान का काम [illegible] समय

जाता था। उस समय कैम्प से बाहर निकलने का प्रश्न ही नहीं रहता था।

एक दिन वे आफिसर-क्लब से लौट रहे थे कि एक आदमी मजीद के साथ चलता हुआ, उसके हाथ में एक कागज का टुकड़ा दे गया। मजीद ने वह कागज अपनी चमड़े की पतलून में ठूँस लिया।

ग्रोमोव प्रायः कैम्प से क्लब को और क्लब से कैम्प को आता-जाता हुआ गाया करता था। इससे सब जान जाते थे कि क्लब समाप्त हो गया और कैम्प की बुलबुल चली आ रही है। कैम्प के संरक्षक प्रायः उससे परिचित थे।

शेड में पहुँच ग्रोमोव ने पूछा, "साथी, क्या था ?"

"एक सन्देश है।"

प्रकाश करने के लिए ग्रोमोव ने सिगरेट निकाली और उसको सुलगाने के लिए माचिस जलाई। मजीद ने पढ़ा। केवल दो पंक्तियाँ लिखी थीं—"कल रात के समय क्लब के पीछे, रसोईघर के पास, लैबरोस्की।"

"अच्छी बात है," ग्रोमोव ने कहा, "हम बरफ के सागर में डूबने जा रहे हैं।"

"मर जाएँगे, तब भी ठीक है।"

"नहीं, मरेंगे नहीं। हमको रिवाल्वर और कारतूस निकाल लेने चाहिए।"

"कल क्लब जाने से पहले कर लूँगा।"

बहुत बात करने के लिए अवसर नहीं था। उन्होंने शराब, जो शेड में बरफ के नीचे दबा रखी थी, निकाल ली और उसको अपने बिस्तर में लेकर सो रहे। बरफ में दबे रहने के कारण शराब जम गई थी, अब बिस्तर में शरीर की गरमी से पिघल गई। प्रातः उन्होंने थोड़ी-थोड़ी पी और नदी के तट पर काम करने चले गए। सारा दिन वहाँ काम किया और मध्याह्न का भोजन करने शेड में चले आए।

एकाएक ध्रुव का प्रकाश विलीन हो गया। मजीद ने यह सुअवसर जान, अपना कैम्प के बाहर जाने का परमिट लिया और चल पड़ा। संरक्षक ने पूछा, "कहाँ जा रहे हो, इस समय ?"

"गवर्नर साहब के बंगले में उनकी स्त्री ने बुलाया है। आज रात क्लब में एक विशेष प्रोग्राम होने वाला है।"

मजीद घटाटोप अंधेरे में गवर्नर के बंगले में पहुँचा और उसके

आ गया है, इस कारण अपने पूरे साहस से काम लेना चाहिए।

मजीद ने अपनी जेब से रिवाल्वर निकालकर कहा, "मेरे पास यह रिवाल्वर और सौ के लगभग कारतूस हैं।"

"कहाँ पा गये हो इनको तुम?"

"वहीं कैम्प में।"

"मेरे पास भी एक है। पर हमारे दूसरी स्लेज वालों के पास कुछ नहीं।"

"तो उनको आगे निकल जाने दें। हम पीछे से उनकी रक्षा करेंगे।"

"ठीक है।"

लैवरोस्की ने हाथ के संकेत से पिछली स्लेज को आगे निकल जाने दिया और अपनी को उनके पीछे कर लिया। दोनों कुतुबनुमा हाथों में लेकर दक्षिण की ओर भागे जा रहे थे। पांच मिनट के भीतर ही दूर से गोली चलने का शब्द हुआ और उनको ऐसा अनुभव हुआ कि बरफ पर सैंकड़ों छप-छप के शब्द उनके समीप आते-जाते हैं। लैवरोस्की ने मजीद से कहा, "अपना रिवाल्वर भर लो, मैंने अपना भर रखा है।"

दोनों स्लेज पूरे वेग से जा रही थीं, परन्तु उनका पीछा करने वाले समीप और समीप आते-जाते प्रतीत होते थे। मजीद स्लेज के बीच पीछे की ओर मुख कर बैठ गया और रिवाल्वर तान, आ रहे कुत्तों को देखने लगा। कुत्तों के पीछे पाँच स्लेज थीं, परन्तु उनको खींचने वाले बारह-सिंगे दुर्बल थे। वे स्लेजें धीरे-धीरे पीछे रहती जाती थीं। इस पर भी कुत्ते भागने वाली स्लेजों के समीप आते-जाते थे।

सबसे आगे का कुत्ता स्लेज के पास पहुँचा, तो उस पर चढ़ने को लपका। मजीद तैयार बैठा था। उसने गोली चला दी। यह कुत्ते की

डॉ० ने रामी से कहा, "अब तुम्हारा क्या विचार है ?"

"किस विषय मे, पापा ?"

"कहाँ रहना चाहती हो ?"

"जहाँ पहले रहती थी ।"

"मुझको यह बताया गया है कि तुम आरम्भ से ही देवीदत्त के पास रहती थी । शायद तुम्ही सब झगड़े की जड हो ।"

रामी चुप रही ।

"इससे बहुत बदनाम हो गई हो ।" डॉ० ने कहा ।

"मैं यही चाहती थी । मेरी ऐसी ही योजना थी ।"

"मेरा कहा मानो । दिल्ली चली जाओ । किसी के पास बैठकर, अपना जीवन शान्ति से व्यतीत करो ।"

"आपकी सम्मति पर विचार करूँगी ।"

"कहो तो तुमको ले जाने के लिये मोटर भेज दूँ ?"

"आप इतना कष्ट क्यों करेंगे ? हूँ तो मैं आपकी नौकरानी ही । मैं रेलगाडी से चली आऊँगी ।"

"कुछ चिन्ता नही । मेरे पास कुछ रुपये रखे हैं । वे मैं विमल की माँ के सामने तुमको दे देना चाहता हूँ और चाहता हूँ कि तुम्हारा कही विवाह हो सके तो ठीक है ।"

रामी चुप रही । उसने कोई उत्तर नही दिया ।

जब वह दिल्ली आई तो उसके लिए उसका पुराना कमरा खाली करवा दिया गया । कमली से रामी का पत्र-व्यवहार चलता रहता था । उसको विदित था कि उसका विवाह नही हुआ । इस पर भी उसके देवीदत्त के घर मे रहने पर, वह उसको कुँवारी नही मानती थी । दिल्ली में वह उससे मिलने आई और कहने लगी, "देखो रामी, जो कुछ हो चुका है, उसके पश्चात् कोई यह नही कह सकता कि तुम कुँवारी हो । इस कारण यह झूठी आशा लगा रखना कि विमल आकर नीला के [illegible] तुमसे विवाह कर लेगा, मिथ्या है ।"

[illegible] विवाह नही कर रही [illegible] चाहती हूँ । यह तो [illegible]रे अपने मन के सन्तोष के लिये है । इस सन्तोष के साथ-साथ यदि [illegible] पर भी यह मुख्य

कर उसको पता चला कि किसलिये बुलाया गया है। जब डॉ० राधा-
ण ने पूर्ण समस्या उसके सामने रखी तो वह खिलखिलाकर हँस
ा। उसने कहा, "आपको न तो मैं कोस सकता हूँ, न ही आपको
क्षा दे सकता हूँ। आप आयु मे, शिक्षा मे और अनुभव मे मुझसे बड़े
इस पर भी मुझको आपकी सब बातें बच्चों जैसी प्रतीत होती हैं।
ी आपके और मेरे मुकाबले में एक अनपढ छोकरी ही तो है, परन्तु
के काम विचारशीलों के लिए एक विचित्र समस्या उपस्थित करते
मैं तो उसको समझ नही सका।

"जब मैंने होश सँभाला था, मैं समाज की वर्तमान समस्याओं पर
वार करता रहा हूँ। मैंने इमोसा, इज़ाया, प्लेटो, सुकरात, अरस्तू,
ा, मुहम्मद, वर्जिल, टॉमस मूर, कार्ल मार्क्स और एंजिल इत्यादि कई
लासफरो को पढा है और समझने का यत्न किया है। उन सबके
ाव को इस रामी ने अपने आचरण से मिथ्या सिद्ध कर दिया है।

"मैं तो इस लडकी से विवाह करने के लिये तैयार था, पर अब मैं
झता हूँ कि उससे इस बात के लिये कहना अन्याय हो जायगा। कोई
य था कि मैं अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिये कोई भी उपाय प्रयोग
ने के लिये उद्यत रहता था। पर अब अन्याय और अत्याचार के अर्थ
झने लगा हूँ और साधनो में उनको सम्मिलित करना नही चाहता।"

डॉ० ने देवीदत्त की बात सुनकर, उसे केवल यह कहा, "तुम रामी
इस विषय पर बात कर लो और पीछे अपनी धारणा बताना।"

: २ :

देवीदत्त रामी से एकान्त में मिला। रामी ने उसको देखकर कहा,
ो आप आ गये हैं ?"

"हाँ, पता लगा है कि तुमने बुलाया है।"

"इसलिये बुलाया है कि एक धनी-मानी, पढ़ा-लिखा व्यक्ति एक
दीन भिखारी की लडकी के आत्म-अभिमान को तोडना चाहता है।
प क्या करने को कहते हैं ?"

देवीदत्त ने इन शब्दों में छिपी मन की वेदना को अनुभव किया
र केवल यह कहा, "मैं इस पाप में भागीदार नहीं हूँगा, रामी !"

"तो क्या मैं आपके पास पहले की भाँति रह सकती हूँ ?"

"तुमने मेरे लिये वह कुछ किया है, जो मैं जीवन-भर भूल नही
कता। इस कारण तुम जैसे भी रहना चाहोगी, रह सकोगी। परन्तु मैं
बात पूछता हूँ कि तुम इस प्रकार छिपकर क्यों रहती हो ? जो तुम

लगा हूँ। यही कारण है कि मैं धोखा-धड़ी से समय पर काम निकालने को न केवल व्यर्थ प्रत्युत् अकल्याणकारी मानने लगा हूँ।

"मैं सिद्धान्तों से कार्ल मार्क्स का अनुयायी था परन्तु उक्त परिवर्तनों [illegible] की भाँति प्रतीत होने लगा है, [illegible] पड़ा हो…।"

"मास्टरजी, इन सब बातों का मेरे साथ क्या सम्बन्ध है ? मैं तो आप जितनी पढ़ी-लिखी नहीं और आपके मन में चल रहे वाद-विवाद को न तो समझती हूँ और न समझने की आवश्यकता मानती हूँ। मेरा मार्ग तो सरल और सीधा है। अपने इष्टदेव की सेवा करनी है। वह सेवा उसकी उन्नति में सहायक होकर हो सकती है। पापा और मम्मी कह रहे हैं कि मेरा विवाह कर लेना विमल के मार्ग को साफ कर देगा। मैं तो यह समझना चाहती हूँ।"

"मैं यही कह रहा था। मैं समझता था कि तुम मुझसे झूठ-मूठ का विवाह कर मेरे साथ, जैसे हम पहले रहते रहे हैं, वैसे अब विवाह ओढ़नी ओढ़कर रहना चाहती हो। यदि मैं विवाह के पश्चात् शरीर भोग माँगूं तो तुम संसार के अन्य प्राणियों से मुझको श्रेष्ठ मानती हो यही न ?"

रामी ने उत्तर नहीं दिया, परन्तु उसके आँसुओं की अविरल धा उसके मन के आशय को बता रही थी। देवीदत्त ने कुछ काल तक उसे इस धारणा को समझने का अवसर दिया। पश्चात् कहा, "मेरे कहने का अर्थ यह है कि मैं तुमको अपनी बहिन मानता हूँ। इस कारण न तो तुम विवाह करूँगा और न ही कभी पति के अधिकार मागूँगा। साथ ही मेरा तो यह कहना है कि तुम इस प्रकार का झूठ-मूठ का विवाह करो ही क्यों फिर तुममें और रीता में अन्तर ही क्या रह जायगा ? उसने भी तो अपनी एक महत्त्वाकांक्षा के लिए झूठ-मूठ का विवाह किया है और तुम भी वहीं करने के लिए कहती हो। उसने अपने जीवन का महल झूठ के आधार पर खड़ा करना चाहा है, जो प्रकृति ने गिराकर रख दिया है। क्या तुम भी यही कुछ चाहती हो ?"

इसने सब समस्या का विश्लेषण कर दिया। रामी ने अब दूर क्षितिज के समीप एक आशा की किरण देख, उत्साहित हो पूछा, "तो आप मुझको क्या करने को कहते हैं ?"

"छोटी इस बेटी को। इसने रीता उत्पन्न की है। यह लीला का निर्माण कर रही है, जिसके भविष्य के विषय में कहना कठिन है। यह

नना चाहती है।
दर है, परन्तु वे शुद्ध वैज्ञानिक-
कता से बहुत दूर प्रतीत होता है।
, कुछ नहीं। यही कारण है कि
ठानी में लगाकर, परीक्षण करने
ो बन गए हैं।
ा है। तुम वहां चली जाओ और
वान् तुम्हारा भला करेगा। भाई
।"
एक शब्द भी डॉक्टर को नहीं
अपना निर्णय कल तक विचार-

इस बात से सन्तुष्ट थे। वे इस
ने की आशा कर रहे थे।
:
था कि रामी के त्याग की बात
सको छोड़ रामी से विवाह कर
थी और रामी से उसकी तुलना
एक गौर वर्ण और सुन्दर अपने
ए० में पढ़ रही थी। रामी का
ा। वह किसी स्कूल कॉलिज में
पर एक विशेष प्रकार का ओज
भुत सौम्यता थी, जिसके सामने
ोन लगा था।
ी इच्छा होती है, वैसे ही भावना
अतिरिक्त उसके मन में विमल के
नहीं होता था। वह विमल के,
ववाह करेगी, सोचती रहती थी।
की ओर था, परन्तु उसको एक
विचार छोड़ बैठी थी। कभी वह
दृष्टि डालती थी और कभी किसी

निश्चय न होने के कारण और कुछ

अपने माप-दण्ड से किसी लडके को उपयुक्त न मानने के कारण वह अनिश्चित-मन थी। इतना उसके मन मे स्पष्ट था कि बी० ए० पास करने के पश्चात् उसका विवाह होगा। एक धनी बाप की बेटी होने से उसके मन मे यह धारणा-सी बैठी हुई थी कि समय आने पर अच्छे-से-अच्छा लडका उसका पाणिग्रहण करने के लिए मिल जाएगा।

जब देवीदत्त दिल्ली आया तो उसके मन में एक बार तो धडकन उत्पन्न हुई, परन्तु उसकी साधारण पोशाक देख वह दब गई। देवीदत्त रामी से मिलकर कोठी के लॉन मे घूम रहा था और रामी के व्यवहार पर मनन कर रहा था। उसे गम्भीर विचार मे देख, नीला ने समझा कि रामी से उसकी कोई बात निश्चित हो गई है। वह उस निश्चय की रूपरेखा को जानने की उत्सुकता को रोक नही सकी। वह देवीदत्त समीप आकर बोली, "जीजाजी, क्या मैं आपको बधाई दूँ?"

"किस बात के लिये? मैंने कौन समर जीता है, जिसकी बधा देना चाहती हो?"

"रामी को जीतना, समर जीतने से अधिक नही है क्या?"

"नीलादेवी, तो रामी को जाकर बधाई दो। उसने मुझको जीत लिया है।"

नीला ने समझा कि दोनो के विवाह की बात हो गई है। इससे प्रसन्न हो उसने कहा, "बात एक ही है। विवाह मे पति को बधाई दू अथवा पत्नी को, क्या अन्तर पडता है? कौन कह सकता है कि किसकी जीत और किसकी पराजय हुई है।"

"बहुत समझदार हो गई हो नीला! परन्तु जो तुम समझी हो, बात वह नहीं है। विवाह मे किसी की भी जीत और पराजय मैं नहीं मानता। उसमे उभय पक्ष बराबर ही रहते हैं। मेरा आशय तो विचारधारा से है। मैं उस अनपढ़ लडकी से हार गया हूँ। उसकी जीवन-मीमासा मेरी धारणा से श्रेष्ठ सिद्ध हुई है। मैं एक स्कूल मास्टर के नवीय जीवन से पतित होकर एक वश्या का पति बन गया हूँ और वह एक भिखारी की लडकी के स्तर से उठकर, अपने चरित्र के कारण, दिल्ली के एक समृद्ध परिवार मे स्थान उत्पन्न कर रही है।"

"हम उसमे डरते नहीं हैं। यह तो केवल पापा की उदारता और सहिष्णुता है जो उसको समझा रहे हैं।"

देवीदत्त खिलखिलाकर हँस पड़ा। नीला ने खीजकर पूछा, "आप मुझको गलत समझते हैं क्या!"

हूँ। इँगने मे कारण केवल यह
। वह समझती है कि यदि वह
पर भारी मुसीबत आ पड़ेगी
ठनाई दूर करने मे यत्न करना

मे ही तो मैं उससे घृणा करने
न्दर समझती है कि उसको देखने
।"

को हो क्या गया है। क्या यह वही
उससे सहानुभूति रखती थी और
ह नीला के आज के व्यवहार को
अपने मन की बात कहने के लिए
'नीला, मैं तुम्हारे भावो को भली-
-पिता क्यो उसको विवाह करने के

चाट तो है ही नही। बिगड गई तो
ारण मानवता के नाते वे उसको
कनारे लग जायें।"
सन्देह नहीं है न? उसका समाचार

हैं, जैसे मैं उनकी होने वाली पत्नी
ती है।"
ऐसा पति पाने के लिये बधाई दिये
। डॉक्टरजी से कहूँगा कि रामी पर
। गँवाएँ। उसको जाने दें जहाँ वह
ह करना चाहती है।"
य मे विचार करते हो?"
ो विवाह हो चुका है आपकी बहिन
?"
रे से विवाह का प्रस्ताव लेकर आये

ब वह दूर हो चुका है।"
हो गई है?"

"सुलह तो नहीं हुई। हाँ, मेरे मन में उसके प्रति जो कटुता-सा मैं था, वह दूर हो गया है। मैं उस कॉन्ट्रेक्ट को, जो मेरा उसके साथ था, एक मानयुक्त वस्तु समझता था और उसके पूरा कराने का हठ करता था।

"अब मेरा विचार बदल गया है। मैं उस कॉन्ट्रेक्ट को एक अति घृणित बात मानने लगा हूँ। मैं उसकी पूर्ति के लिये हठ करना अपने लिए निन्दनीय वस्तु समझने लगा हूँ।"

नीला देवीदत्त की इस कलाबाज़ी पर चकित रह गई। वह उनसे प्रेम करना पागलपन मानने लगा है। वह रीता से अपना विवाह तो मानता है, पर उससे कुछ प्रतिकार माँगना निन्दनीय समझने लगा है। इस अपने आश्चर्य को वह छिपा ... विचित्र है। पर यह कैसे हु...

"नीला, यह बात अनु... हूँ, पर शायद समझा नहीं र... भी कभी वैसी ही परिस्थिति आ जा पड़ेगी, जैसी मे मैं पड़ गया था।

"मैं मानता था कि मरने के पीछे कुछ नहीं रह जायगा। इस कारण ...र्ण सुख इस जीवन में प्राप्त करने का यत्न करता रहता था; परन्तु ...य अंग्रेज़ ने मुझपर पहली गोली चलाई और दूसरी के लिये रिवाल्वर ...ता, तो मैं ऐसा घबराया कि मैं उसका विरोध करना तो दूर रहा, ...नी मौत सामने खड़ी देख आँखें मूँद खड़ा हो गया। रामी ने क्या ... किस प्रकार साहस बाँध गोली के लिये मेरे सामने खड़ी हो, सीना ... दिया, मैं वर्णन नहीं कर सकता। वह क्या बात थी, जिसने उसको ... जान जोखम में डालने के लिये तैयार कर दिया, किस प्रकार ...अपना सिर मृत्यु के मुख में दे दिया, यह वर्णन से ऊपर है। यह ... यह वीरता उसमें कहाँ से आई?

...मैंने जब इस विषय पर विचार किया तो इस परिणाम पर पहुँचा ...ह जीवन-मीमांसा, जिसको मैं मानता था, असत्य थी। वास्त-...वन की व्याख्या रामी की है, जो जीवन को सत्य मानती हुई भी, ...ागने के लिए सदैव तत्पर रहती है।"

"... अब आप रामी से विवाह करेंगे?"

"... मुझको अपना बड़ा भाई मानती है और मैं उसको बहिन। ...या में मैं उससे कैसे विवाह कर सकता हूँ? मेरे विचार-...ह पहले मैं उससे विवाह करने का अवसर पाता तो ...

वनाओं को कुचल भी डालता,
मझता था, वे आज सत्य तथा

अधिक ठेस तब पहुँची, जब
वाह का प्रस्ताव पागलपन था।
में हो चुकी है और उसके
ई कारण नहीं कि उसका विवाह
विमल की बदल देवीदत्त को
देना, उसको स्वीकार नहीं हुआ।
वट बदले हुए कहा, 'यह तो
रूढ़िवाद के कीचड़ में फँस गये हैं
हा है, परन्तु आपका क्या होगा ?
गायु से ऊपर हो जायँगे। यह
ोन किये हुए थी, कहीं विलीन हो
अन्तिम भाग नीरस, शून्य और
रा भारी शोक है। पर इस स्वार्थ-
ता कर सकता है ?"
न इस सुहृदयता और महानुभूति
ह सकता हूँ कि भगवान् निर्बल के

६ :
ा होती रही—लीला के विवाह के
ाई समाप्त करने के विषय में, ब्रजेश
ाने के विषय में और गीता के विषय
ने इस वार्तालाप में घसीटने का यत्न
वीदत्त इस गोष्ठी में उपस्थित तो थे,
भाग नहीं लिया। जब नींद ने विवश
। अगले दिन सबसे पहले जागने वाला
। स्वभावानुकूल गुलेल लेकर बोटी
ाए इत्यादि का शिकार करने की बात

परन्तु सफलता नहीं मिली। इससे उसने
ाद में रत, लॉन में टहलना प्रारम्भ

कर दिया। इस समय स्वरूपरानी भागती हुई आई और बोली, "रामी लापता है। वह अपने कमरे में नही है ?"

"कहाँ गई है ?"

"चौकीदार ने बताया है कि प्रातः पाँच बजे वह अपने कमरे से निकल, कोठी के बाहर चली गई थी और फिर लौटकर नही आई।"

"यह अन्तर है रीता और रामी मे। एक ही कार्य की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न व्यक्तियों पर भिन्न-भिन्न होती है।"

"आप तो प्रत्येक बात मे सिद्धान्तो की विवेचना करने में लगे रहते हैं। समय पर क्या करना चाहिए, कभी विचार नही करते।"

"मैं तो समझता हूँ कि मनुष्य अपनी इच्छा से कुछ नही कर सकता। जो कुछ वह करता है, प्रकृति की प्रेरणा से ही करता है। प्रकृति जन्म के वातावरण से बनती है। उस वातावरण मे माता-पिता का स्वभाव और उनकी···।"

"फिर वही बात शुरू कर दी आपने। मैं कहती हूँ कि इन विवेच-नाओं को छोड़ कार्य करने की सोचिए। आपके मनोवैज्ञानिक परीक्षण बहुत हो चुके। उनके परिणामो को जीवन मे भी ढालने का यत्न कीजिए।"

"तो क्या करूँ ?"

"पता कीजिये कि वह कहाँ ठहरी है। विमल की माँ के घर ठहरने न दीजिए। दिल्ली से बाहर हो तो कोई ऐसा प्रबन्ध कीजिए कि वह विमल के जीवन मे पुन न आ सके।"

"देखो रानी, मैंने रीता को ठीक मार्ग पर लाने का यत्न किया था। क्या परिणाम हुआ है ? इस छोकरी को भी मैं अपने विचार से मार्ग पर लाने का यत्न कर रहा था। इसका परिणाम रीता से भिन्न होने पर भी मेरी योजना के अनुसार नही हुआ। इस पर भी तुम कहती हो तो यत्न करूँगा।"

देवीदत्त को जब पता चला तो वह चिन्ता प्रकट करता रहा। कमला ने सुना तो वह प्रसन्न थी। उसका विचार था कि जितना रामी भागदौड़ करेगी, उतनी ही बदनाम होगी।

मध्याह्न के भोजन के समय देवीदत्त ने नैनीताल लौट जाने की स्वीकृति माँगी। उसका कहना था, "मुझको बहुत शोक है कि मैं आपकी योजना में सहायता नही दे सका।"

"कोई कुछ नहीं कर सका।" डॉ० का कहना था।

यह समझौता कर उसका पालन करेंगी।"

"कैसे सक्षम आप देखना चाहते हैं ?"

"जब तक कोई कार्य मार्क्स के सिद्धान्तों पर विश्वास रखता है, तब तक वह यह भी मानता है कि साधन गौण है और साध्य मुख्य। वे तो अपने लक्ष्य की सिद्धि के लिए प्रत्येक प्रकार का कार्य करने को तैयार रहती हैं। सामयिक कठिनाई को पार करने के लिए देवीजी कोई भी समझौता अथवा वचन दे सकती हैं। उनका पालन तो उनकी आवश्यता पर निर्भर होगा, न कि वचन पालन करने के विचार से।"

"इस पर भी समझौते के बिना संसार चल नहीं सकता।"

"ठीक है। परन्तु यह तो आप भी मान लेंगे कि मेरा संसार रीता के बिना चल रहा है और चल सकेगा।"

देवीदत्त नैनीताल पहुँचा तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। रीता उसके घर में ठहर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। जब वह रिक्शा से उतर रहा था तो नौकर ने आकर सूचना दी, "दीदीजी आई हुई हैं।"

"कौन दीदीजी ?"

"श्रीमती रीतादेवीजी, जो निर्वाचन लड़ी थी।"

"क्या कहती थी ?"

"कुछ नहीं। अपना कमरा खुलवाकर रहने लगी हैं।"

देवीदत्त कुछ क्षण तक वहीं खड़ा विचार करता रहा। पश्चात् रिक्शा से सामान उतरवाकर मकान पर चढ़ गया। रीता सीढ़ियों पर खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। देवीदत्त उसका मुख देखता रह गया। बात रीता ने आरम्भ की, "दो दिन से आपकी प्रतीक्षा हो रही है।"

"किस ज्योतिषी ने कहा था कि देवीजी एक गरीब हैडमास्टर की प्रतीक्षा करें ?"

"मैं ज्योतिष और ज्योतिषियों पर विश्वास नहीं रखती। मैं तो अपने मन की प्रेरणा से आई हूँ।"

"अच्छी बात है। क्या मैं जान सकता हूँ कि देवीजी का मन क्या कहता है ?"

"आइये बैठिये, फिर मन की बात भी कहूँगी। इसी के लिए तो आई हूँ।"

देवीदत्त ने अपना कमरा खुलवाकर, उसमें अपना बिस्तर रखवाया। पश्चात् नौकर से चाय लाने के लिये कह, बैठक में बैठ गया। जब रीता

रहे और एक-दूसरे का कभी मुख न देखें। इस समझौते मे यह वात भी
[illegible] कोई भी ऐसी

नही ?"

देवीदत्त हँस पडा। इस समय नौकर चाय ले आया था। रीता ने चाय लेकर बनानी आरम्भ कर दी। जब चाय का प्याला बना और रीता ने देवीदत्त के सामने रखा तो देवीदत्त ने उसको रीता की ओर बढाकर कहा, "आप पीजिये।"

"मँगवाई तो आपने थी।"

"हाँ, परन्तु आपके लिये।"

"मैं तो आपके आने से कुछ काल ही पहले पीकर हटी थी।"

"तो और पी लो। देखो रीता, मैं तुम्हारे हाथ की बनी चाय नही पीऊँगा। मुझको प्रतिक्षण भय लगा हुआ है कि तुम मुझको विष देकर मार डालोगी।"

रीता के माथे पर त्योरी चढ गई; परन्तु शीघ्र ही अपना क्रोध पीकर बोली, "आप मुझसे यह आशा करते है क्या?"

"जो उद्देश्य-पूर्ति के लिये हर प्रकार के साधन प्रयोग करने में विश्वास रखता है, उससे यह आशा करना स्वाभाविक ही है।"

"वह तो राजनीतिक क्षेत्र की बात है। उसको आप निज के जीवन मे कैसे घटा सकते हैं? हत्या करने वाले को स्वयं भी तो फाँसी पर जाने का भय होता है।"

"जब कोई मनुष्य पाप करता है, तो यह समझता है कि पुलिस उसको पकड नही पायेगी। यही बात तो ब्रजेश के मन मे थी, जब उसने मुझ पर पिस्तौल तानी थी। यही बात प्रत्येक चोर, डाकू और हत्यारे के मन मे होती है।"

"पर मैं आपको पूर्ण आश्वासन देती हूँ कि मैं ऐसी कोई बात नहीं करूँगी।"

"मुझको तुम पर कोई विश्वास नहीं। हाँ, तुम यह बताओ कि इस नवीन समझौते में तुम मुझसे क्या चाहती हो? मैं तुमसे समझौता करना नहीं चाहता, इस कारण मैं तुमसे कोई शर्त नहीं माँगता। इस पर भी यदि तुम्हारी माँग युक्तियुक्त हुई तो मैं मान जाऊँगा। यह एक-तरफा समझौता होगा। तुम्हारे सिर पर कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा।

श्रौर बनाते सायंकाल हो गया। उसने नौकर को श्रावाज़ दी, "माधो! माधो!! चाय लाओ।"

"मास्टरजी कह गए हैं कि दूध-चीनी के लिए पैसे आपसे ले लूँ।" माधो ने श्राँखें नीची किये ही कह दिया।

"बहुत पाजी है, तुम्हारा मास्टर।"

माधो मुस्कराकर चुप कर रहा। इससे श्रागबबूला हो रीता घर से निकल गई। जाते हुए वह कह गई, "देखो, मैं दस बजे लौटूँगी। दरवाज़ा बन्द कर कहीं सो न जाना।"

वह सीधी मिनर्वा होटल में गई। वहाँ देवीदत्त चाय पी रहा था। वहाँ उसके साथ मेज़ पर बैठ, बैरे को चाय का श्रार्डर दे, देवीदत्त से बोली, "श्रीमान् स्वामीजी महाराज! क्या श्रब श्राप श्रपनी पत्नी को चाय-पानी देने से भी ना कर रहे हैं?"

"तो माधो ने तुमको बता दिया मालूम होता है। मैंने ही उसको कहा था। एक गरीब मास्टर, उस पर पत्नी मिली तो एक बोझा पत्नी के पिता मिले तो दूसरा बोझा। डॉ० साहब ने दिल्ली बुलाया परन्तु एक पाई खर्चे के लिए नहीं दी। पत्नी जी घर में श्राई हैं सब चीनी-चाय, श्राटा-दाल समाप्त कर दिया। श्राखिर इस ग मास्टर की पॉकेट कितनी लम्बी हो सकती है? उसकी भी सीमा है

"तो श्राप दिल्ली गये थे? क्या मैं जान सकती हूँ कि किस मत के लिये गये थे?"

"क्यों नहीं? जैसे मेरे साथ धोखा कर श्राप-जैसी श्रीमती मेरे ग बाँध दी गई हैं, वैसे ही धोखा देकर, मुझको रामी के गले बाँधने प्रबन्ध होने वाला था। पर रीता, रामी तुम श्रौर मुझसे चतुर निकल वह परसों रात चुपचाप कहीं भाग गई है श्रौर तुम्हारे पिता का परीक्ष उस पर नहीं चल सका।"

"तो रामी दिल्ली में थी?"

"हाँ, डॉ० साहब के बँगले में। वे उसको प्रेरणा दे रहे थे कि वा विवाह कर ले श्रौर मुझको उपयुक्त पति मान, वहाँ बुलाया गया था

"फाके की नौबत क्यों आएगी ? कोई अजेश-जैसा
और गांठ का पूरा मिल जायेगा ।"

"अच्छी बात है, तो कोई अजेश ढूंढती हूं । पर इस
निशाना नहीं चूकेगा ।"

देवीदत्त हंस पड़ा और हंसकर बोला, "अजेश का
करो देवीजी ! उसका निशाना तो ठीक था, पर किसी दूसरे
कर दी थी । एक बार रामी ने और दूसरी बार माधो ने ।
महाशय तो हम दोनों को जहन्नुम में भेज चुका था ।"

"तो इस बार रामी और माधो आपकी सहायता
सकेंगे ।"

"पर एक और है, जो रामी और माधो को साधन बनाये हुए
वह तो अब भी मेरे साथ रहता है ।'

"उससे भी निपटा जा सकता है ।"

इतना कह रीता चली गई । देवीदत्त को भयभीत करने के
उसने प्रयत्न जारी कर दिया था । उसका विचार था कि इस वार्ता
के पश्चात् देवीदत्त को रात-भर नींद नहीं आएगी ।

अगले दिन, जब देवीदत्त उससे बातचीत करने आया तो
उसकी आंखों में रात का अनिद्रापन देखना चाहती थी । उसने
"सुनाइये, रात कैसी बीती ?"

"जैसे सदैव बीतती है । देवीजी को रोटी मिली या नहीं ?"

"बात यह है कि पुलिस द्वारा चलाये गए मुकद्दमे पर सब
खर्च हो गया है । अजेश एक सहारा था । जब आवश्यकता होती थी,
उसके द्वारा प्रबन्ध हो जाता था । उसके हवालात में होने के कारण
भी तो आय का साधन नहीं रहा । कल मेरे पास एक फूटी कौड़ी नहीं
थी । इस कारण अभी तक कुछ नहीं खाया ।"

"मुझको बहुत शोक है । परन्तु यह बात तुमने बताई नहीं थी ।
मैंने समझा कि दबाव डालकर देवीजी भोजन करना चाहती हैं । खैर,
छोड़ो इस बात को । अभी होटल में चलते हैं और भोजन करते हैं ।"

"तो चलिए । मैं तो भूख से व्याकुल हो रही हूं ।"

देवीदत्त मुस्कराया और दोनों होटल में जा पहुंचे । वहां एकान्त
लगे । खाते हुए देवीदत्त ने पूछा, "अब बताओ,

लग ही गया है । मेरे पास पैसा

"फाके की नौबत क्यों आएगी ? कोई ब्रजेश-जैसा अकल का अन्धा और गाँठ का पूरा मिल जायेगा।"

"अच्छी बात है, तो कोई ब्रजेश ढूँढ़ती हूँ। पर इस बार उसका निशाना नहीं चूकेगा।"

देवीदत्त हँस पड़ा और हँसकर बोला, "ब्रजेश का अपमान मत करो देवीजी ! उसका निशाना तो ठीक था, पर किसी दूसरे ने गड़बड़ कर दी थी। एक बार रामी ने और दूसरी बार माधो ने। नहीं तो वह महाशय तो हम दोनों को जहन्नुम में भेज चुका था।"

"तो इस बार रामी और माधो आपकी सहायता नहीं कर सकेंगे।"

"पर एक और है, जो रामी और माधो को साधन बनाये हुए था। वह तो अब भी मेरे साथ रहता है।'

"उससे भी निपटा जा सकता है।"

इतना कह रीता चली गई। देवीदत्त को भयभीत करने के लिए उसने प्रयत्न जारी कर दिया था। उसका विचार था कि इस वार्तालाप के पश्चात् देवीदत्त को रात-भर नींद नहीं आएगी।

अगले दिन, जब देवीदत्त उससे बातचीत करने आया तो वह उसकी आँखों में रात का अनिद्रापन देखना चाहती थी। उसने पूछा, "सुनाइये, रात कैसी बीती ?"

"जैसे सदैव बीतती है। देवीजी को रोटी मिली या नहीं ?"

"बात यह है कि पुलिस द्वारा चलाये गए मुकद्दमे पर सब रुपया खर्च हो गया है। ब्रजेश एक सहारा था। जब आवश्यकता होती थी, उसके द्वारा प्रबन्ध हो जाता था। उसके हवालात में होने के कारण कुछ भी तो आय का साधन नहीं रहा। कल मेरे पास एक फूटी कौड़ी नहीं [illegible]"

[illegible] बताई नहीं थी। [illegible] चाहती है। खैर, छोड़ो इस बात को। अभी होटल म चलते है और भोजन करते हैं।"

"तो चलिए। मैं तो भूख से व्याकुल हो रही हूँ।"

देवीदत्त मुस्कराया और दोनो होटल में जा पहुँचे। वहाँ एकान्त में भोजन मँगवाकर खाने लगे। खाते हुए देवीदत्त ने पूछा, "अब बताओ, किसलिए आई हो ?"

"एक कारण तो आपको पता लग ही गया है। मेरे पास पैसा

माई हो ? मेरे पास क्या रखा
ारा भारी खर्चा गहन कैसे कर

तुमने वचन-भग किया था, तभी
ा लेना चाहिए था।"
ने के लिए विवश करना चाहते

ही नही। मुझको तुम्हारे इस
नही होगी।"
ा अध्याय प्रारम्भ करने के लिए
बनकर रहना चाहती हूँ।"
होना।"
"

इसके लिए जीवन का सुधार

।"
क मेरी ओर देखो, देश की उच्च
ौर उसका भी आप तिरस्कार कर

देखना चाहता हूँ कि मेरे प्रति
नही।"
देख सकेंगे।"
वश्यकता नही, मैं तुम्हारे प्रत्येक
न्तोष हो जायगा, मैं स्वय जाकर

ने का प्रबन्ध ?"
' जो है।"
दिन मिलता है और वह भी वर्ष
तो असेम्बली बैठेगी और सब मिल-
अधिक नही होगा।"

चित्र थे। वे चित्र रीता देवी की सम्पत्ति थी। देवीदत्त ने उनको चुरा लि
या और उन चित्रों को रुपया ऐंठने के लिए प्रयोग करना चाहता था।
इसपर उसको क्रोध आ गया और उसने दो गोली चला दी। एक गोली का
निशाना व्यर्थ गया। रानी ने, जो देवीदत्त की रखैल है, उसके हाथ को
हिला दिया था। दूसरी गोली चलने के समय रानी देवीदत्त के सामने
खड़ी हो गई। परन्तु भाग्य, देवीदत्त के नौकर ने उसे पकड़कर हिला
दिया। गोली रानी की छाती में लगने के स्थान, उसकी जाँघ में जा
लगी।

रीता का बयान हुआ। उसका कहना था कि यह सत्य है कि देवी-
त उससे रुपया ऐंठता रहता था। उसने ब्रजेश से कहा था कि वह
सको समझाए। इस पर भी उसका यह मतलब नहीं था कि वह इसकी
थवा किसी अन्य की हत्या करे। वह और कुछ नहीं जानती।

सरकारी वकील ने पूछा, "देवीदत्त ने कभी तुमसे कहा है कि यदि
म रुपया नहीं दोगी तो वह एलबम दिखाएगा?"

"वह मुझसे रुपया माँगता रहता था।"

"तुम्हारी आय का स्रोत क्या था?"

"यह मैं बताने की आवश्यकता नहीं समझती।"

"वह एलबम किसकी सम्पत्ति है?"

"मेरी है।"

"उसमें के चित्र वास्तव में तुम्हारे हैं?"

"जब मेरे पास थी, उसमें के चित्र मेरे थे।"

"वह चित्र जिसको देखकर ब्रजेश को क्रोध आ गया था, तुम्हारा
था?"

"मैं नहीं कह सकती कि कौन चित्र उसने देखा था।"

"देखिए, यदि आपने टालमटोल उत्तर दिये, तो हम वह एलबम
ाँ मँगवा, कोर्ट में उपस्थित करने की माँग करेंगे।"

"मैं समझती हूँ कि इन प्रश्नों की आवश्यकता नहीं। इनका हत्या
साथ कोई सम्बन्ध नहीं।"

इस पर कोर्ट ने सरकारी वकील से कहा, "आप इस एलबम के
षय में प्रश्न पूछकर, क्या सिद्ध करना चाहते हैं?"

"श्रीमान्, प्रत्येक कार्य के पीछे कुछ उद्देश्य होता है। ब्रजेश का क्या
श्य था इस हत्या करने के यत्न में, और उस उद्देश्य में रीता को क्या
भ होने वाला था, इस लाभ को रीतादेवी चाहती थी अथवा नहीं

पर आक्रमण कर दिया। इग्लैण्ड और फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इसके साथ ही भारत सरकार ने भी जर्मनी से युद्ध की घोषणा कर दी।

जब रूस ने आधे पोलैण्ड पर अधिकार कर लिया तो बिना युद्ध-घोषणा के, रूस की भी फ्रांस, इग्लैण्ड, भारत और अन्य मित्र-राष्ट्रों से युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई।

परिणामस्वरूप मित्र-राष्ट्रों के नागरिकों को, जो रूस मे थे, पकड़कर बन्दी बना लिया गया था। लाखो-पोल निवासियों को कन्सट्रेशन कैम्पो मे भेजा गया और सैकडो की सख्या मे फ्रेंच, इगलिश और भारतियो को भी कैद कर लिया गया। इस पकड़-धकड़ मे कोटलवाल भी पकड लिया गया।

इसकी प्रतिक्रिया भारत मे भी हुई और पहले जर्मन और इटली-निवासी पकड लिये गए, पीछे रूसी और कम्युनिस्ट भी पकडे गए

मजीद लैवरोस्की और शीरी के प्रयत्नो से सोवियत सरकार की धांधली से बचकर, कोलीमा से भाग निकला और एक एस्किमो-परिवार की सहायता से उत्तरी चीन की सीमा के भीतर पहुँच गया। उत्तरी चीन में च्याग काई शेक के विरुद्ध विद्रोह हो रहा था। इस कारण शीरी और मजीद एक चीनी मन्दिर में सिर छिपा कर पडे रहे। वहाँ दोनो का विवाह हो गया। दोनो ने मन्दिर मे बौद्ध-धर्म की दीक्षा ले ली और वहाँ के नागरिक बन रहने रहे।

जापान के चीन पर आक्रमण के प्रसार पर दोनो को, मन्दिर छोड अन्य सहस्रो चीनियों के साथ तिब्बत की ओर भागना पड़ा। बड़ी-बड़ी नदियों को पार करते हुए, सैकडो मील की मरुभूमि में से पैदल चलते, पहाडो और घाटियों को लांघते हुए शीरी और मजीद ल्हासा पहुँच। वहाँ पहुँच उन्होंने रूस की शरण ली। वहाँ से रूस में अपने

"कितना बड़ा कमरा है वह ?"

"बारह फुट लम्बा-चौड़ा होगा।"

"गजब है। तुमको मालूम होना चाहिये कि मैं बारह अन्य कैदियों के साथ एक कमरे मे बन्द था, जो छः फुट लम्बा व छः फुट चौड़ा था और इसी कमरे के बाहर आदमी टट्टी-पेशाब करते थे और एक महीने भर से ऊपर तक हम सब इसमे बन्द रहे।"

"क्या छत्तीस वर्ग फुट मे बारह आदमी ? असम्भव है। ऐसा नहीं हो सकता। तुम लोग तो उसमें बैठ भी नही सकते और फिर सोते कैसे होगे ?"

मजीद मुस्कराता रहा। मुलाकात का समय समाप्त हो गया और वह जेल से बाहर चला आया। भारत के जेलो की वह बहुत निन्दा सुन चुका था, परन्तु मास्को के जेल की बात स्मरण करके तो वह समझता था कि दासता में बद्ध भारत रूस से अच्छा है।"

राजनीति ने फिर पाँसा पलटा। जर्मन ने बिना सूचना दिये रूस पर आक्रमण कर दिया और रूस ने जर्मन के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी। इगलैंड और फ्रांस रूस के मित्र हो गये और भारत के कम्युनिस्टो ने जेल के भीतर से ही ऐलान कर दिया कि भारत को युद्ध मे इगलैंड, फ्रांस और रूस की सहायता करनी चाहिये।

इस ऐलान को मजीद और शीरी ने पढ़ा और कम्युनिस्टो की इस कलाबाजी पर खिलखिलाकर हँस पड़े। मजीद अपने पिछले कामो को स्मरण करके तो रो पडा। शीरी के, इसका कारण पूछने पर मजीद ने बताया, "ये प्रसन्नता के आँसू हैं, शीरी ! एक समय था कि मैं भी इन मूर्खों की मण्डली में था। मैं अब अपने को भाग्यवान् समझता हूँ कि मैं इनमे नही हूँ। मेरे मन मे प्रकाश हो चुका है।"

इस काल मे मजीद को डॉक्टर राधाकृष्ण से भी मिलने का अवसर मिला। उसने डॉक्टर साहब को रीता से जेल में मुलाकात की बात बताई। डॉक्टर ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "वह तुम्ही हो, जिसने

बताता था।

'जी नहीं।' रामी ने कहा।

तब मजीद और डोरी पीछे से आये तो डोरी ने टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी में पूछ लिया, 'आपका नाम हम जान सकते हैं क्या?"

हाँ, आप मेरे पति मुझको जानते हैं, परन्तु भूल गए हैं। मेरा नाम रामी है।

मजीद ने कहा, "रामी ?" और वह स्मरण करने लगा। रामी ने उसे स्मरण कराने के लिए कह दिया, "रहिमन को तो आप नहीं भूल गए हैं।"

"ओह!" मजीद आश्चर्य में देखता रह गया। फिर खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "तुम? तुम यहाँ कैसे रहती हो? ठीक स्मरण आ गया। तुम रीता का नौकरानी के रूप में यहाँ आई होगी और जो वे तुम रीता के जेल में जाने पर बन गया था, भर रही हो।'

रामी हँस पड़ी और बोली, "मैं क्या हूँ, यह आप समझ नहीं सकते।"

'कुछ भी हो। तुमने रीता से बदला खूब लिया है।"

रामी के होंठ हिले और उसके मुख से बहुत धीमी आवाज में निकल गया, "लाल बुझक्कड़।"

इसपर भी उसने उनको कुछ नहीं कहा। केवल पूछा, "तो आप फिर मिलने आयेंगे?"

"रामी, हमको चाय का निमन्त्रण दोगी?"

"मैं तो आपकी पुरानी नौकरानी हूँ। आज्ञा कीजिये। आइये।" इसपर उसने डोरी को एक अंग्रेज औरत समझ अंग्रेजी में कह दिया, "मैडेम, कम इन एण्ड ब्लेस दिस हम्बल एबोड बाई टेकिंग ए कप ऑफ टी। इट शैल गिव मी दी ग्रेटेस्ट प्लेज़र।"

रामी को अंग्रेजी बोलते देख, मजीद और भी आश्चर्य करने लगा। डोरी जो अंग्रेजी समझती थी, रामी के निमन्त्रण को स्वीकार कर, मजीद की बाँह-में-बाँह डाल मास्टर साहब के घर में घुस गई।

: ८ :

दो दिन पीछे देवीदत्त बरेली से लौटा तो रामी ने मजीद के विषय में बताया। देवीदत्त ने उसके होटल में, जहाँ वे ठहरे हुये थे, मिलकर रात के भोजन का निमन्त्रण दे दिया। रामी अभी नैनीताल में ही थी और इस भोजन पर उपस्थित थी।

जाय ।

देवीदत्त ने अपना सन्देह मजीद को बताते हुए कहा, "मजीद [illegible] आप कुछ समय तक तो रूस में कम्युनिज्म का कार्य होते देख [illegible] क्या वहाँ सब मनुष्य स्वेच्छा से अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करते हैं?"

मजीद हँस पड़ा। उसने कहा, "इस बात के जानने का कि [illegible] इच्छा से कोई कितना कार्य करता है, समय ही नहीं [illegible] स्पष्ट है कि प्राय. मेहनत-मजदूरी करने वाले, फौजी संगीनों की [illegible] पर अपनी शक्ति से अधिक कार्य कर, अपने जीवन को समय से [illegible] समाप्त करते रहते हैं।"

देवीदत्त काँप उठा। उसने कहा, "मैं ऐसा ही समझता था। [illegible] कोई पैसे वाला वेतन देकर उचित से अधिक काम कराता है, तो [illegible] सेना के बल से मजदूरों से उचित से अधिक कार्य कराया जाता है। [illegible] वाले को तो कभी मजदूर धमका अथवा समझा-बुझा भी सकता है, [illegible] राज्य को तो कोई कुछ कह ही नहीं सकता। राज्य के पास देश की [illegible] सम्पत्ति और शक्ति होने से मजदूर बेचारा विवश हो जाता है।"

"हाँ, इसके साथ ही रूस की सरकार बदली नहीं जा सकती [illegible] वहाँ का विधान ऐसा है कि बोलशेविक पार्टी के अतिरिक्त [illegible] राजनीतिक पार्टी बन ही नहीं सकती। अर्थात् जो लोग एक बार [illegible] राज्याधिकारी होने से पुलिस और फौज के अधिकारी [illegible]

तो तभी मिल सकती है जब कार्य के अनुसार फल का सिद्धान्त माना जाय।

देवीदत्त ने अपना सन्देह मजीद को बताते हुए कहा, "मजीद साहब, आप कुछ समय तक तो रूस में कम्युनिज्म का कार्य होते देख आये हैं। क्या वहाँ सब मनुष्य स्वेच्छा से अपनी शक्ति के अनुसार कार्य करते है?"

मजीद हँस पड़ा। उसने कहा, "इस बात के जानने का कि अपनी इच्छा से कोई कितना कार्य करता है, समय ही नहीं आया। कारण स्पष्ट है कि प्राय. मेहनत-मजदूरी करने वाले, फौजी संगीनों की नोक पर अपनी शक्ति से अधिक कार्य कर, अपने जीवन को समय से पूर्व समाप्त करते रहते हैं।"

देवीदत्त काँप उठा। उसने कहा, "मैं ऐसा ही समझता था। यदि कोई पैसे वाला वेतन देकर उचित से अधिक कार्य कराता है, तो राज सेना के बल से मजदूरों से उचित से अधिक कार्य करा सकता है। पैसे वाले को तो कभी मजदूर धमका अथवा समझा-बुझा भी सकते हैं, प[illegible] [illegible] की पूर्ण

[illegible]।"

[illegible] सकती।

वहाँ का विधान ऐसा है कि बोलशिविक पार्टी के अतिरिक्त दूसरी राजनीतिक पार्टी बन ही नहीं सकती। अर्थात् जो लोग एक बार नेता बन गये, वे राज्याधिकारी होने से पुलिस और फौज के अधिकारी हो जाते है और उनका विरोध करने वाला फाँसी चढ़ा दिया जाना स्वाभाविक है।"

"इसपर भी एक बात तो माननी ही पड़ेगी।" देवीदत्त का कहना था, "कि रूस उन्नति कर रहा है।"

"हाँ सैनिक सगठन और सैनिक उपक्रमो के उत्पादन मे और इन पर पूर्ण जाति की स्वतन्त्रता और सुख-सुविधा का बलिदान करके।"

मजीद को रीता के व्यवहार का पता चला तो वह उससे घृणा करने लगा। देवीदत्त को रूस की भीतरी बातों का ज्ञान हुआ, तो कम्युनिज्म पर उसके मन में उठ रहे सशयों को समर्थन मिला।

शीरी इस समय रामी से बातें करती रही। शीरी को रामी की जीवन-कथा का पता चला तो उसने पूछा, "पर यह बात समझ में नहीं आई कि तुम क्यों अपने प्रेमी के दूसरी पत्नी के पाने में सहायक बन रही हो?"

और उसी होटल में आकर ठहरेगी, जिसमें वे ठहरे हुए थे।

मजीद ने उसे अपना सामान होटल में लाते देखा तो उसको सफल-रूप से छूटने पर बधाई दी और फिर शीरी को लेकर देहरादून मिलने चला गया।

रीता कुछ दिन तो इधर-उधर अपने पुराने परिचितों के आगे-पीछे भागती रही और मजीद से मिलने का अवकाश नहीं पा सकी। इसके आने के छः-सात दिन बाद वह निश्चिन्तता अनुभव करने लगी और एक दिन मजीद के कमरे में आकर बोली, "शीरी बहिन, तुम तो न जाने कहाँ घूमती रहती हो, कभी मिलती ही नहीं?"

शीरी ने कह दिया, "दिन-रात तो आपके कमरे में ताला लगा रहता था। किस प्रकार आपसे मिलते?"

"अच्छा अब मैं निश्चिन्त हो गई हूँ। सरकारी अफसरों से एक काम था, उसी के होने में इतने दिन लग गये।"

"एक कम्युनिस्ट को सरकारी अधिकारियों से क्या काम हो सकता है?"

"अब तो कम्युनिस्ट पार्टी सरकार की नीति का समर्थन करती है। बात यह है कि इंगलैंड की पराजय रूस की पराजय है, इस कारण इंगलैंड और रूस दोनों एक ही नौका में हैं। नौका को डूबने नहीं देना, अन्यथा रूस गया तो फिर कम्युनिज्म का खुर-खोज नहीं मिलेगा।"

"तुम ठीक कहती हो रीता!" शीरी ने अपनी बात कह दी, "परन्तु इसके ठीक होने में कारण यह नहीं कि रूस इसमें सम्मिलित हो गया है, प्रत्युत इसका कारण यह है कि एक ओर इंगलैंड एक प्रजातन्त्रात्मक देश है। दूसरी ओर हिटलर और स्टालिन पूर्ण रूप में तानाशाही चला रहे हैं। हमें प्रजातन्त्रात्मक सत्ता का समर्थन करना है। इसी में मानवता पनप सकती है।"

"वही मैं करने जा रही हूँ। यू० पी० सरकार के होम सेक्रेटरी ने मेरी योजना स्वीकार कर ली है। उसने फौजी अफसरों से भी राय ली है और दो-चार दिन में ही कार्य आरम्भ करने वाली हूँ। मैंने अपनी योजना के लिए पचास हजार मासिक सहायता माँगी है और एक-दो दिन में कम्युनिस्टों की एक टुकड़ी यहाँ एकत्रित हो, फौजी भरती का कार्य करेगी।"

"तो तुम अब रिक्रूटिंग ऑफिसर बन गई हो! मैं तुमको इस बात के लिए बधाई देती हूँ।"

"मेरा आपकी पत्नी न बनने मे कारण यही था कि मैं सदैव के लिए मूर्ख नही बन सकी। एक दौरा था मूर्खता का, वह निकल गया तो पुन स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करने की लालसा जाग उठी।"

"परन्तु यह मूर्खता का दौरा तो फिर भी आता रहा है?"

"हाँ, इस पर भी यह बीमारी स्थायी कभी नही हुई।"

"कुछ भी हो। जब यह बीमारी होती है, तो बहुत पुरलुत्फ (आनन्दप्रद) होती है।"

"यही तो इस बीमारी के लक्षण हैं।" रीता ने कहते हुए मजीद का हाथ पकड़कर अपने गाल पर रख लिया। मजीद के मन मे आया कि उसका मुख चूम ले, परन्तु इसी क्षण शीरी का स्मरण हो आया। उसका [illegible] लगा। वह सम्भल [illegible] "तो क्या [illegible]

"कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है।"

"पर मैं अपने को हर तरह तन्दुरुस्त पाता हूँ।"

इतना कह मजीद उठ खड़ा हुआ और पूछने लगा, "आपका अब आगे [illegible]ा क्या कार्यक्रम है?"

"किस विषय मे?"

"यही भरती करने के विषय मे।"

"मैं यहाँ से बरेली जा रही हूँ और वहाँ रिक्रूटिंग सैंटर खोलूँगी। [illegible]स प्रकार यू० पी० के सब जिलों मे काम करना है। मेरा विचार है कि [illegible]वल यू० पी० से एक लाख सिपाही भरती हो जाने चाहिए।"

"बरेली कब जा रही हो?"

रीता ने उसको उत्तर नही दिया। उसने मजीद का हाथ पकड़, [illegible]नी ओर खींचकर, उसे अपने पास बिठाने का यत्न किया। इस पर [illegible]ीद ने कहा, "हम कल यहाँ से जा रहे हैं और मैं शीरी के लिए कुछ [illegible] खरीदने जा रहा हूँ।"

रीता ने अपना बैग खोलकर, उसमे सौ-सौ रुपये के नोटों का एक [illegible]ल दिखाते हुए कहा, "भेंट खरीदने के लिए कुछ रुपये चाहिए तो ले [illegible]ते हैं। बतादें कितना चाहिए?"

मजीद वासना से उसकी आँखों मे सुर्खी और फूलती नासिकाएँ देख [illegible] या। वह डर गया कि कहीं उसकी बीमारी की छूत उसको भी न [illegible] जाय। इस कारण उसने कहा, "नहीं, मुझको रुपयें की आवश्यकता

दे रखा है।"
। मेरे पास बहुत है।"
नहीं है। तुम यहाँ से चली जाओ।

लिए, उठकर सामने खड़े हो कहा,
।"
उसके शरीर में आग लग उठी है।
दनदान पर से नीचे खिसकता जाता
रहा था कि रीता ने उसको आलि-
ले लिया। एक क्षण के लिए तो
ने ऐसा प्रतीत हुआ कि वह रीरी से
को दृढ़ कर, उसने रीता से कहा,
र बैठा, मुझको कमरे का दरवाज़ा

वजय हो गई। इससे सन्तुष्ट हो,
ाज़ा बन्द कर दीजिये।"
वहाने कमरे के दरवाज़े के समीप
दृढ़ कर, कमरे से बाहर निकल गया।

टने की प्रतीक्षा करती रही। जब
, गरदन झुकाए अपने कमरे में चली

१० :

लकर साय चार बजे लौटी। वे होटल
देख, वहाँ पर मजीद को न पा कर
ाचे वहाँ मैनेजर से बात करने गये

वे अभी छोड़कर जाते ही नहीं।"
आवेंगे तो पूछेंगे।"
ई और बैरा के लिए घण्टी बजाई कि
, ही लगी थी कि मजीद आया और
म कल यहाँ से जा रहे हैं।"
साथ कल 'वाटर फॉल' देखने का

प्रोग्राम बना चुकी हूँ।"

"मेरा विचार है कि रामी बहिन हमको दिल्ली वापस जाने की स्वीकृति दे देंगी।"

अब शीरी और रामी को ऐसा अनुभव हुआ कि मजीद कुछ चिन्तित है। रामी ने पूछ ही लिया, "भाईजान, क्या बात है? कमरा खुला छोड़कर कहाँ चले गये थे आप?"

"यहाँ, इस कमरे मे कोई डर का कारण उत्पन्न हो गया था।"

"क्या था?" शीरी ने चिन्ता अनुभव कर पूछा।

"एक भूत, और मैं भाग गया।"

शीरी मजीद के समीप बैठ, उसके माथे पर हाथ रखकर देखने लगी कि वह कही बीमार तो नही हो गया। उससे मजीद का यह कहना उन्माद के लक्षण प्रतीत होते थे। रामी मजीद के मुख पर देखती रही। उसको कुछ-कुछ समझ आया तो हँस पड़ी।

शीरी इस हँसने का अर्थ समझ नही सकी। रामी ने अपना संशय निवारण करने के लिये पूछ लिया, "भाईजान, उस भूत को कही पीटना तो नही पड़ा?"

"भूत? क्या मतलब है आपका?" शीरी ने अपने पति को हर प्रकार से स्वस्थ देख पूछा।

"'घोस्ट', इसका अर्थ तो शीरी, समझती हो न! यह कई वर्ष के पश्चात् किसी गुप्त कन्दरा मे से छिपा हुआ निकल आया और उसने मुझको इतना भयभीत किया कि मैंने यहाँ से भाग जाना ही उचित समझा।"

शीरी को डर हो गया कि मजीद का मस्तिष्क खराब हो रहा है। परन्तु रामी को मजीद के कहने का अर्थ समझ आ रहा था। इस कारण उसने पूछा, "अब तो आपको वह भूत इस कमरे मे दिखाई नहीं देता न?"

"नहीं, मेरे चले जाने के बाद वह चला गया प्रतीत होता है। पर वह फिर यहाँ आ सकता है।"

"मेरी सम्मति है कि आप लोग तुरन्त दिल्ली लौट जाएँ। सत्य ही वह भयंकर जन्तु है।"

इस पहेली को जब शीरी नहीं समझी, तो रामी ने कहा, "यदि आप टैक्सी से अभी जाना चाहें तो रात की गाड़ी पकड़ सकेंगे। मेरी सम्मति है कि आपको चला जाना चाहिए।"

न के नौकर को बुलाकर, बिस्तर
अपना सामान बटोर रहा था, तो
मरे मे ले गई और मैनेजर से बिल
मी से पूछने लगी, "रामी बहिन,

ह तो भाईजान स्वय ही बताएँगे।
मत पूछो, शीरी !"
गया था कि रीता ने कुछ गडबड की
अधिकारियो से बहुत हिल-मिल रही
कि रीता से व्यर्थ का बैर मोल

मे ले आई और उससे बोली, "तो मैं
ौर नीचे जाने के लिए टैक्सी का
। आप टैक्सी-स्टैण्ड पर आ जाइये, जिससे

र की प्रतीक्षा किये, वह होटल के नीचे

, मजीद ने शीरी से कहा, "रामी बहुत
था कि तुमसे पृथक् मे बात करूँ और
टल गई है। शीरी, रीता से मेरा पहले
उस सम्बन्ध को पुनर्जीवित करने का
बना हुआ दुर्बल प्राणी, यहाँ से चले

रखते हैं।"
ने बहुत बहादुरी का परिचय दिया है।
। परन्तु एक बात है। रीता आजकल
मिलाप रखती है। वह कम्युनिस्ट है और
छ भी कर सकती है।
हयोग का विरोध कर रहे हैं। मुझको
, वही मुझको महात्मा गाँधी का अनुयायी
"
र शेष तैयारी पाँच मिनट मे समाप्त कर,

जब मजीद और शीरीं रिक्शा में अपना सामान लाद रहे थे तो रीता, जो अपने कमरे मे बैठी मजीद के कमरे की हलचल को देख रही थी, नीचे उतर आई और मजीद के समीप आ बोली, "तो आप जा रहे हैं ?"

"हाँ।"

"क्यों ?"

"मेरे पूर्व कर्मों का भूत मुझको कष्ट दे रहा है। मैं उसके डर से भागकर जा रहा हूँ।"

"आप ठहरिये। मैं उस भूत को आपके मन से निकाल दूँगी।"

"मुझको आपकी योग्यता पर सन्देह है। फिर भी कभी आवश्यकता पड़ी तो आपसे यह काम करवाने का यत्न करूँगा। मैं आपका बहुत आभारी हूँ। अब तो मन यहाँ से ऊब गया है।"

"आप बहुत बेवफा है।" रीता ने आँखो मे आँसू लाकर कहा। शीरी सामान गिन रही थी। मजीद ने कहा, "रीता, तुम नही समझीं क्या कि यह बेवफाई किसी के साथ वफाई की सूचक है ?"

"मैं उससे पहले आई थी।"

"कहाँ आई थी ?"

"तो यह फिर आपको स्मरण कराना होगा ?"

"मुझको स्मरण नही क्या ? तुमने विवाह से ना क्यो की थी ?"

इस समय रामी एक रिक्शा पर सवार हो वहाँ आ गई। वह रीता और मजीद को झगड़ते देख हँस पड़ी। शीरी होटल का बिल देने के लिए होटल के कार्यालय मे गई हुई थी। इस कारण रीता ने रामी को हँसते देख कहा, "शट-अप रामी ! यह मजाक नही है।"

रामी गम्भीर हो गई और मजीद से बोली, "मैं आपके लिए टैक्सी कर आई हूँ। पेट्रोल डलवाकर टैक्सी अड्डे पर तैयार खडी है। यह टैक्सी का नम्बर है और यह पन्द्रह रुपये की रसीद है।"

इस समय शीरी होटल का बिल चुकाकर बाहर आ गई। मजीद ने कहा, "शीरी, रामी को पन्द्रह रुपये दे दो। यह टैक्सी कर आई है।"

रामी और शीरी एक ओर चली गईं। मजीद ने रीता से कहा, "देखो रीता, मास्टर साहब से सुलह कर लो। वह बहुत ही अच्छा आदमी है।"

: ११ :

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में 'क्विट इण्डिया' आंदोलन की चर्चा

पर हड़ताल हुई और फिर उपद्रव हुए। 'बलिया में भी हड़ताल हुई। पश्चात् जुलूस निकाला गया। अपार भीड़ थी जुलूस के साथ। सब लोग जोश और नेताओं के पकड़े जाने पर क्रोध से भर रहे थे। लोग नारे लगा रहे थे, 'अंग्रेज़ ! निकल जाओ ! देश खाली कर दो। जंग में नहीं जाएँगे।" इत्यादि।

यह जुलूस फौजी भर्ती केन्द्र के बाहर से गुजरा। इस दिन रीता केन्द्र में आई हुई थी। उसके साथ कुछ अन्य कार्यकर्ता कॉमरेड भी थे। केन्द्र के बाहर एक 'साइन बोर्ड' लगा था—'जनता के युद्ध में जनता को सफल बनाने के लिए फौज में भरती हो जाओ।'

जुलूस में किसी ने केन्द्र के सामने खड़े होकर नारा लगा दिया, 'जंग में' सहस्रों उसके पीछे कह उठे, 'नहीं जाएँगे।'

नारा लगाने वाले ने कहा, 'भर्ती !' दूसरे कहने लगे, 'नहीं होंगे।'

एक ने दूसरे के कन्धे पर खड़े होकर, भर्ती होने के लिए बताने वाला 'साइन बोर्ड' उतार दिया। साइन बोर्ड कपड़े पर लिखकर बनाया गया था। वह कपड़ा चिथड़े-चिथड़े कर दिया गया।

कुछ लोग भर्ती करने के कार्यालय में घुस गये और वहाँ का फर्नीचर तोड़ने लगे। रीता वहाँ खड़ी यह सब-कुछ देख रही थी और क्रोध से उसका मुख लाल हो रहा था। लोग अपना क्रोध मेज़-कुरसियों पर निकाल, वहाँ से जा रहे थे कि मकान की छत पर से कुछ लोगों ने ईंट [illegible]

[illegible]

लोग, उसे मार डालने और उसकी बोटी-बोटी नोच डालते।

छत पर जाकर भी वह भीड़ के क्रोध से बच नहीं सकी। लोगों ने भर्ती करने के कार्यालय को आग लगा दी। पाँच-छः कॉमरेड और रीता छत पर आग में घिर गए। कार्यालय का मकान तीन मंज़िल का था और उसके पिछवाड़े वाला मकान दो मंज़िल का था। रीता ने, उस दो मंज़िल वाले मकान के ऊपर कूद जाने के अतिरिक्त, बचने का कोई उपाय नहीं देखा। वह उस ओर गई और अपने साथियों सहित कूद पड़ी।

पिछवाड़े वाला मकान खाली पड़ा था। कूदने समय रीता के पाँव [illegible] और उसके लिए चलना कठिन हो गया। उसके साथी

रीना ने चिट्ठी डालकर पूछा, "नीला का विवाह कब होगा?" उसका उत्तर आया, "वह जानता है।"

: १२ :

विमल को सन् १९४१ में लौट आना चाहिए था, परन्तु युद्ध के कारण उसको आने के लिए जहाज नहीं मिला। बहुत यत्न के पश्चात् वह एक जहाज में स्थान पा सका और जनवरी, १९४३ में हिन्दुस्तान में पहुँच सका। बम्बई पहुँच उसने दिल्ली तार दिया कि वह दो दिन में पहुँच रहा है।

उसका तार जब पहुँचा तो स्वरूपरानी नीला को बताने उसके कमरे में गई। वह अपने कमरे में नहीं थी। रात के आठ बजे थे और उसको अपने कमरे में होना चाहिए था।

एक घन्टा पीछे स्वरूपरानी पुनः उसका पता करने, उसके कमरे में गई। वह अभी भी वहाँ नहीं थी। डॉ० अपने नियमानुसार क्लब गया हुआ था। नीला इस समय तक अवश्य ही घर लौट आया करती थी। इस कारण स्वरूपरानी की चिन्ता बढ़ गई। वह उसकी प्रतीक्षा दस, ग्यारह और बारह बजे तक करती रही। वह नहीं आई। इस समय डॉ० घर पर आया तो स्वरूपरानी ने नीला के विषय में उसको बताया। डॉ० नहीं जानता था कि वह घर पर क्यों नहीं आयी।

नीला को कॉलिज छोड़े एक वर्ष से ऊपर हो चुका था और वह कुछ काम नहीं करती थी। वह प्रायः सायंकाल घूमने चली जाया करती थी, डॉ० को अब स्मरण हुआ कि कुछ दिन से वह उदास रहती थी, परन्तु इसको एक साधारण बात समझ, उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया था। आज उसको घर पर न आये देख उसको, उसकी उदासी का कुछ अर्थ समझ आने लगा।

डॉक्टर स्वरूपरानी के साथ उसके कमरे में गया और उसके मन की अवस्था के लक्षण ढूँढने लगा।

नीला की किताबें इधर-उधर बिखरी हुई थीं और आसमान की भी कोई व्यवस्था नहीं थी। डॉक्टर साहब ने इसको देखकर यह परिणाम निकाला कि वह कई [illegible] अपने कमरे और अपनी वस्तुओं की
नहीं दे रही [illegible] . कपड़ों का सन्दूक देखा गया।
योग्य [illegible] । इस[illegible] अर्थ यह था कि वह
विचार [illegible] ों में पड़े
जात

रीता ने चिट्ठी डालकर पूछा, "नीला का विवाह कब होगा?"
उसका उत्तर आया, "वह लापता है।"

: १२ :

विमल को सन् १९४१ मे लौट आना चाहिए था, परन्तु युद्ध के कारण उसको आने के लिए जहाज नही मिला। बहुत यत्न के पश्चात् वह एक जहाज मे स्थान पा सका और जनवरी, १९४३ मे हिन्दुस्तान में पहुँच सका। बम्बई पहुँच उसने दिल्ली तार दिया कि वह दो दिन में पहुँच रहा है।

उसका तार जब पहुँचा तो स्वरूपरानी नीला को बताने उसके कमरे में गई। वह अपने कमरे मे नही थी। रात के आठ बजे थे और उसको अपने कमरे मे होना चाहिए था।

एक घन्टा पीछे स्वरूपरानी पुन: उसका पता करने, उसके कमरे में गई। वह अभी भी वहाँ नही थी। डॉ० अपने नियमानुसार क्लब गया हुआ था। नीला इस समय तक अवश्य ही घर लौट आया करती थी। इस कारण स्वरूपरानी की चिन्ता बढ गई। वह उसकी प्रतीक्षा दस, ग्यारह और बारह बजे तक करती रही। वह नही आई। इस समय डॉ० घर पर आया तो स्वरूपरानी ने नीला के विषय मे उसको बताया। डॉ० नही जानता था कि वह घर पर क्यो नही आयी।

नीला को कॉलेज छोड़े एक वर्ष से ऊपर हो चुका था और वह कुछ काम नही करती थी। वह प्राय: सायंकाल घूमने चली जाया करती थी, डॉ० को अब स्मरण हुआ कि कुछ दिन से वह उदास ी थी, परन्तु इसको एक साधारण बात समझ, उसने इस ओर ध्य ीं दिया था। आज उसको घर पर न आये देख उसको, उसकी उद न कुछ अर्थ समझ आने लगा।

डॉक्टर स्वरूपरानी के साथ उसके कमरे में गया और उसके मन की अवस्था के लक्षण ढूंढने लगा।

नीला की किताबें इधर-उधर बिखरी हुई थीं और आसमान की भी कोई व्यवस्था नही थी। डॉक्टर साहब ने इसको देखकर यह परिणाम निकाला कि वह कई दिन से अपने कमरे और अपनी वस्तुओं की ओर ध्यान नहीं दे रही थी। नीला के कपड़ो का सन्दूक देखा गया। इसमें से पहनने योग्य कपड़े निकल चुके थे। इसका अर्थ यह था कि वह घर छोड़ने का विचार करके गई है।

इसके पश्चात् किताबों की मेज पर और मेज के दराजों में पड़े

बात समाप्त हुई। विमल अपने बहिन-भाइयों से मिलकर कोठी लौट आया। अगले दिन डॉक्टर बिस्तर से निकला। विमल ने डॉक्टर की बीमारी का निदान करना चाहा, पर बीमारी कोई होती तो पता चलता। डाक्टर ने कहा, 'विमल बेटा, मैं तुमको अपनी बीमारी के विषय में स्वयं अपनी रिपोर्ट दूंगा।'

इसपर विमल इधर-उधर की बातें करने लगा। रात अपनी माँ से मिलने की बात बताते हुये उसने माँ के बंगले पास में किसी लड़की को नीला समझ, उसको बुलाने की बात बताई साथ ही यह भी बताया कि माँ की दृष्टि दुर्बल हो गई है।

परन्तु इस समाचार को सुन डॉक्टर के माथे पर पसीने की बूंदें टपकने लगीं और उसका दिल बैठने लगा। विमल ने डाक्टर को देखा और पूछा, "डैडी, यह क्या है?"

"यही तो कष्ट है, विमल!"

"तो आपको 'हार्ट ट्रबल' (हृदयरोग) है?"

डाक्टर अपने मन को दृढ़ करने लगा था। पश्चात् अपने को काबू में करके कहने लगा, "अपनी माँ को कहना कि मुझको मिले। उससे काम है।"

विमल ने बताया कि वह एक दो दिन में जायेगा तो कह देगा।

डॉक्टर को इससे सन्तोष नहीं हुआ। उसने तुरन्त स्वरूपरानी को कमली के घर नीला के विषय में सब बातचीत जानने के लिये भेजा। स्वरूपरानी गई और पता कर आई कि वह कहाँ मिली थी, युवक की रूपरेखा कैसी थी और पीछे वे किधर चले गये थे।

कमली को इस पूछताछ से सन्देह हो गया, तो स्वरूपरानी ने सब बात बता दी और उससे मिन्नत करके कहा कि वह अभी किसी को कुछ न बताये—विमल को भी नहीं।

उसी दिन से नई दिल्ली के सब प्रमुख स्थानों पर खोज आरम्भ हुई। डॉक्टर साहब को इस समाचार से स्फूर्ति मिल गई और वह दिन-भर नई दिल्ली के चक्कर काटने लगा।

इसी बीच रीता के पत्र आये और उनका उत्तर दे दिया गया। एक सप्ताह के अथक प्रयत्न के पश्चात् डॉक्टर ने नीला को पृथ्वीराज रोड पर एक कोठरी में खड़े देखा। डॉक्टर ने अपनी मोटर, जिसमें वह दिन-भर घूमा करता था, लौटा ली और उसको कोठी में ले गया। नीला अभी भी लॉन में खड़ी फूलों की क्यारियों का निरी-

विमल इस कथा को सुन स्तब्ध रह गया। बिना एक भी शब्द कहे, वह उठकर अपने कमरे में चला गया। कमली उसके पीछे, उसके

कमली गई तो स्वरूपरानी आई और पूछने लगी, "विमल बेटा, अब क्या होगा ?"

"मम्मी, मैं अभी कुछ नहीं कह सकता। क्या जानना चाहती हो कि मेरे मन में पहली बात क्या आई थी ? मेरे मन में रह-रहकर यह बात आ रही है कि डॉ० साहब की पिस्तौल लूँ और नीला को गोली से मार डालूँ। परन्तु मैं इसको पशुपन समझता हूँ।"

: १३ :

डॉक्टर ने नीला के विषय में खबर मास्टर देवीदत्त को भी भेजी थी। नीला के लापता होने का समाचार सुन वह दिल्ली चला आया। रीता भी टाँग में बरागन दबाये दिल्ली आ पहुँची।

देवीदत्त ने डॉ० साहब की कोठी में ठहरना कोई उचित नहीं समझा। वह फतेहपुरी के एक होटल में ठहर गया। रीता तो कोठी में चली आई थी।

विमल अपने भावी व्यवहार का निश्चय कर चुका था। वह निश्चय उसने डॉ० साहब को एक पत्र द्वारा लिख भेजा। उसमें उसने लिखा था—

'पूज्य डैडी, मैं आपके एहसान के नीचे इतना दबा हुआ हूँ कि इस कठिनाई के समय में भी, अपनी ओर से आपकी प्रत्येक आज्ञा के पालन का आश्वासन दिये बिना नहीं रह सकता।

: से

ड-

गठ

टना

कि

लिए

साया है, शीघ्रातिशीघ्र पहुँचा दूँगा। वे सब वस्तुएँ उसके लिए ही हैं, उसको मिलनी ही चाहिएँ।

'आपने मुझ पर बहुत धन व्यय किया है। मैं इसको वापस करने

तुमने मेरा तिरस्कार कर एक कम पढ़े-लिखे को पसन्द किया। मैं समझता हूँ कि तुमको पूर्ण रूप से प्रसन्न होना चाहिये।"

नीला ने गम्भीर निःश्वास लिया और यह कह वह उठ पड़ी, "हैप्पीनैस इस संसार में कहीं है क्या?"

"और कहीं हो चाहे न हो, परन्तु तुमको 'अनहैप्पी' होने का कोई कारण नहीं।"

"आप नहीं जानते।" इतना कह नीला ने मुख मोड़ लिया और धीरे-धीरे दरवाजे से बाहर हो गई।

विमल मुख देखता रह गया।

: १४ :

रामी और गीता कई बातों में सहमत थीं। इस कारण जब तक मजीद नैनीताल में रहा, तब तक दोनों नित्य मिलती रहीं। एकाएक गीता के दूषित व्यवहार से प्रभावित हो मजीद और गीता दिल्ली चले गये। उनके जाने पर रामी भी उत्तर-काशी चली गई।

रामी गीता के व्यवहार पर मनन करती हुई नैनीताल से गई थी और ज्यों-ज्यों वह उसके आचरण पर विचार करती थी, उसे गीता पर दया आती थी। यह ठीक था कि वह धारा-सभा की सदस्या बन गई थी और अब सरकार की ओर से भारी धन की सहायता लेकर, फौज के लिये भरती कर रही थी। परन्तु क्या यही जीवन की सफलता है?

इस पर उसके मन में यह विचार उठा कि यदि यह सफलता नहीं तो और क्या है? वह अपने जीवन से उसके जीवन की तुलना करती थी। यदि वह जीवन में सफल नहीं हुई तो क्या वह स्वयं सफल हुई है? रामी जानती थी कि गीता ने विवाह किया है, वह विवाह कर नहीं सकी। गीता एक धनी बाप की बेटी होकर लाखों अपने पर व्यय कर चुकी है। अपने पिता से, अपने मित्रों से, अपनी पार्टी से और अब सरकार से धन पा रही है। यदि यह कहा जाय कि वह ठाठ से मेंटे-सर्ट हो रही है (पौलिश इन लाइफ) तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस पर भी, जब मजीद नैनीताल से जाने के लिए रिक्शा के स्टैंड खड़ा था और गीता उससे [illegible] कर रही थी, तब उसके मुख पर निराशा, दुःख और [illegible] स्पष्ट दिखाई दे रही थी। तो क्या यह सफलता है?

इसके विपरीत वह अपने मन में विचार कर रही थी कि उसको क्या कष्ट, दुःख अथवा [illegible] है? [illegible] [illegible] [illegible]

मेरा प्रेम उनमे है, यही पर्याप्त है।"

देवीदत्त इस मानसिक अवस्था को पराजित अवस्था समझता था। उसने उससे कहा भी कि यह 'डिफीटिज्म' है, परन्तु रामो ने इसको ऐसा नही माना। उसने कहा, 'नही दादा, यह मेरी पराजय नही, प्रत्युत् विजय है।"

"विजय ? किस पर ?"

"अपनी इन्द्रियो के विषयो पर। देखिये, अनेक से कम स्वादिष्ट भोजन मुझको प्राप्त होता है। यो तो पेट भरने-मात्र को ही तो पाती हूँ। इस पर भी मुझको असन्तोष नही होता। इस प्रकार यदि यौन-सम्बन्धी तृप्ति नही होती, तो असन्तोष का कुछ कारण नही।"

वह जब उत्तर-काशी मे पहुँची तो पूर्ण रूप से प्रसन्न और सन्तुष्ट थी। उसके मन में अब यह जानने की भी लालसा नही रही थी कि विमल कब हिन्दुस्तान लौटता है और उसका नीला से विवाह कब होता है। वह अपनी दिनचर्या में ऐसे लग गई, मानो उससे बाहर कोई है ही नही।

जनवरी के महीने में देवीदत्त का पत्र उसको मिला। इसमे उसने नीला के भाग जाने और विमल के लौट आने का समाचार भेजा। रामो ने इसका उत्तर नही दिया।

पश्चात् देवीदत्त का एक पत्र और आया। उसमें उसने अपने दिल्ली जाने और वहाँ विमल से मिलने का वृत्तान्त लिखा। यह भी लिखा कि नीला ने किसी अन्य से विवाह कर लिया है। इसके साथ ही उसने रीता से रीगल होटल में भेंट का वृत्तान्त भी लिखा। उसने लिखा, 'जब मैं डॉक्टर साहब का तिरस्कार पा, अपने होटल मे, जहाँ ठहरा था, आया और नैनीताल लौटने की तैयारी करने लगा तो रीता आ पहुँची। उसने आते ही कहा, "आपने मजीद के विषय में बात पिताजी से क्यों नहीं की ?"

"केवल इसलिए कि उनको पता चल जाय कि मैंने तुमसे सम्बन्ध क्यों तोड़ा है।"

"आपने मुझको बहुत बदनाम किया है। उस एलबम की कथा तो अभी लोग भूले नही और नवीन कहानी सुनाना प्रारम्भ कर दिया है।"

"तो क्या यह झूठ है ?"

"झूठ-सत्य का निर्णय करने वाले आप कौन है ? मैं आपको

उसके घर वाले की क्या बात कर रहे
किया था और जब विवाह नही किया
'वह तो बेचारी निर्धनता का जी
कर रही है।
'मुझको यह जानकर अति हर्ष हु
दिया है और आप कुछ पैदा भी करने
यह पत्र विमल के मन मे उथल-पु
दत्त उसको धोखा देना चाहता है ! इ
धोखा दिया है ? वह इसकी जांच कर
को रामी के विषय मे कुछ भी पता नह
नही किया। क्या इसमे भी कोई रहस्य
इस समस्या को सुलझाने के लिये
और उससे रामी के विषय मे पूछा।
विवाह तो नही हुआ प्रतीत होता।
प्रतीत होती है, परन्तु ऐसा लगता है
वाला, उसे नैनीताल मे छोड गया था।
पास कई वर्ष तक रही है। रीता और
इस कारण हम सबका विचार है कि वह
पत्नी बनकर रही है।
"पीछे वह उसको छोड गई प्रतीत
पता नही था कि वह कहां है। अब फिर
होगी और उन्होने उसको तुम्हारे गले म
है।"
विमल उसके जीवन का यह अनुमा
हुआ। यह ठीक था कि भूल उसने की
भूलें की थी। इस बेचारी का जीवन नि

क्षमा माँग लेगी।"

मोहनसिंह ने रीता के इस प्रकार बातचीत आरम्भ करने पर विस्मय प्रकट किया। उसने कुछ देर विचारकर कहा, "मैंने नीना से यह समझकर विवाह किया था कि वह कुँवारी है। उस दिन आपने जो कथा बताई थी और फिर विमल ने जो इतना-कुछ उसको दिया है, उससे मेरे मन में यह बैठ गया है कि वह विमल की पत्नी रही है। अब मेरी तबीयत उससे बात करने को नहीं चाहती।

रीता कुछ देर विचार करती रही और मोहनसिंह चाय पीता रहा। इस समय रीता ने अपने लिए चाय बनानी आरम्भ कर दी। उसे चुप देख, मोहनसिंह ने कहा, "मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। मेरा मन ही नहीं मानता।"

रीता ने बहुत विचारोपरान्त धीरे-धीरे कहना आरम्भ किया। उसका कहना था, "यद्यपि आपका नीना के विषय में इस प्रकार का विचार करना एक भ्रम है, तो भी यदि आप मेरे इस कहने को अस्वीकार करते हो, तो इस दुखद समस्या का कोई सुझाव भी तो होना चाहिए?"

"मैं सुझाव क्या दे सकता हूँ? आप इतनी समझदार, पढ़ी-लिखी और संसार का ज्ञान रखने वाली हैं। आप ही बताइये कि क्या किया जा सकता है?"

"देखिए मोहनसिंहजी, मैं तो स्वतन्त्र विचार की स्त्री हूँ। पुराने जमाने की वहम की बातों में मेरा बिलकुल विश्वास नहीं है। मैं तो यह समझती हूँ कि यदि विवाह सफल नहीं हुआ तो तलाक हो जाना चाहिए।"

"क्या नीना यह चाहती है?"

"वह मूर्ख लड़की कुछ नहीं चाहती। वह तो दिन-रात रोती रहती है।"

"तो उसको मना लो। वह मेरे विषय में कोई आरोप लगाकर, तलाक माँग ले। मैं आपत्ति नहीं उठाऊँगा।"

"पर यह तो आपके साथ अन्याय हो जाएगा?"

"मेरे साथ अन्याय तो उस दिन हुआ था, जब मैंने उससे विवाह किया था।"

"आपको उसके चरित्र पर सन्देह है। आप आरोप लगा, तलाक माँगिये।"

"केवल दुःख प्रकट करने से तो कुछ बनता नहीं। मुझको विश्वस्त सूत्रों से ज्ञान हुआ है कि मोहनसिंह एक और लड़की से प्रेम करने लगा है। तलाक स्वीकार होते ही उसका दूसरा विवाह हो जायगा। हानि तो नीला बेचारी की होगी।"

"तो क्या किया जा सकता है? उसका चुनाव गलत था और इस भूल का फल तो उठाना ही पड़ेगा।"

इस पर रीता गम्भीर विचार में डूब गई। वे दोनों कुछ काल तक चुपचाप खाना खाते रहे। एकाएक जैसे कोई नया सुभाव सूझा हो, रीता ने कहा, "क्या मैं एक बात का आपको सुभाव दे सकती हूं?"

"क्या?"

"क्या आप उसके भूल के लिए अपराधी को क्षमा नहीं कर सकते?"

विमल इस प्रश्न से अवाक् बैठा रह गया। फिर कुछ काल तक दोनों चुपचाप खाते रहे। विमल ने अपने मन की बात कह दी। उसने कहा, 'मास्टर देवीदत्त का एक पत्र आया था। उसमें उन्होंने लिखा था कि रामो सती-साध्वी है। वह हर प्रकार से कुंवारी है और मेरी प्रतीक्षा कर रही है। मैं तो उसको ढूंढकर उससे विवाह की बात विचार [illegible]।"

[illegible] कि वह उनकी रखैल

[illegible] का कोई स्वार्थ छिपा

[illegible]।"

[illegible] पति-पत्नी के रूप में

तीन-चार साल रहे हैं।'

"झूठ तो नहीं बोलती, दीदी?"

"तुमसे झूठ बोलने में क्या लाभ होगा?"

बात तय हो गई। नीला ने कोर्ट में तलाक के लिए प्रार्थना कर दी। नोटिस जारी हो गया। उसमें केवल एक आरोप था, 'मेरा पति मोहनसिंह मुझको निर्दयता से पीटता है।' मोहनसिंह इस आरोप का उत्तर देने निश्चित तिथि को उपस्थित नहीं हुआ। उस पर डिग्री दे दी गई। नीला मुक्त हो गई।

नीला और विमल मिले। नीला ने अपने किए पर पश्चात्ताप किया और क्षमा मांगी। विमल ने उसको क्षमा कर दिया और उससे

विवाह स्वीकार कर लिया।

मोहनसिंह ने यह दावा, जो डॉ
धारण कर लिया। नीला विमल की मं
साई।

डॉ० साहब ने विमल और नीला
निश्चय हो गया कि चुपचाप विवाह
विवाह हिन्दू रीति रिवाज से किया ज
सिविल विधि को कोर्ट में ही वि
विवाह सायंकाल होना था। दोपहर के
होने का समाचार आ गया। डॉ० ने टे
और अधिक वृत्तान्त जानने का यत्न
कि अधिकारियों ने यह स्वीकार कर लि
गई है। वह सख्त घायल हुआ था और
जाती थी। जांच-पड़ताल के परिणामस्व
इससे यह अनुमान लगाया जा रहा कि

इस समाचार ने विवाह के कार्य प
विवाह-कार्य में मुख्य भाग ले रही थी
थी कि विवाह बिना हल्ले-गुल्ले के हो र
चाहिए।

डॉक्टर राधाकृष्ण अपने बच्चों के ज
कर इस प्रकार गिर पड़ा, जैसे कटा पेड़ गि
ठा, अपने पूर्ण जीवन की निष्फलता पर
क्यों हो गया? रीता, नीला और अब

विमल अपने कमरे में बैठा ब्रजभूषण
चार का अर्थ समझने का यत्न कर
के उत्पन्न होने में किसी प्रयोजनयुक्
ौन है, जो ऐसा कर रहा है और क्यों कर
मात्मा के स्थान पर अधिष्ठित मानता
कार्यों में किसी प्रयोजन का होना सम्
हिन्दुस्तान में पांव रखने के समय नीत
जाना, अब नीला और उसके पति का
र फिर उससे विवाह के अवसर पर नीला
आना—यह क्यों?

पर जा खड़ी हुई। वह, रीता को वहाँ बैठे देख समझ गई कि कोई षड्-यन्त्र चल रहा है। रीता का मुख रामी को देख निस्तेज हो गया था और यह रामी से छिपा नहीं रह सका। नीला तो रामी को देख क्रोध से लाल-पीली होती हुई, कमरे के बाहर निकल गई। विमल और कमली अवाक् रामी को देखते रह गये। इस चुप्पी को रामी ने तोड़ा। उसने कमली को सम्बोधन करके कहा, "काकी पहचाना नहीं मुझको?"

पहचानने में कोई कठिनाई नहीं थी। वह तो यह विचार कर रही थी कि रामी की उपस्थिति में नीला से विवाह असम्भव हो जायगा और इसमें डॉक्टर साहब को ढेरों रुपया देना पड़ेगा।

विमल ने देखा कि रामी के मुख पर विशेष तेज है। उसने शृंगार नहीं किया हुआ था। केवल स्वच्छ श्वेत कपड़े पहने थी और न हाथ में चूड़ी थी, न माथे पर बिन्दी। इसपर भी उसको नीला का शृंगार-युक्त मुख, उसके सामने फीका प्रतीत हुआ था।

कमली ने तो रामी को उत्तर नहीं दिया। विमल ने कहा, "रामी, तुम आ गई हो?"

"हाँ, आपने लिखा था कि नौकरी मिल सकेगी, सो इसी विचार से आई हूँ। ब्रज भैया का समाचार यहाँ आकर मिला है। पहले जानती होती तो कुछ दिन ठहर कर आती।"

"कोई बात नहीं। तुम यहाँ ठहरो, मैं सब प्रबन्ध कर दूँगा।" विमल कहना चाहता था कि नौकरी का प्रबन्ध कर दूँगा, परन्तु मुख से यह शब्द नहीं निकला। रामी जैसी तेजस्वी स्त्री को नौकरी देगा, उसका मन नहीं माना। वह तो किसी भी परिवार में स्वामिन् बनने योग्य प्रतीत होती थी।

"कहाँ ठहरूँ? वि···।" वह नाम लेती-लेती रुक गई।

"अपने पुराने कमरे में।"

उसने चपरासी से कह दिया, "यह पिछवाड़े के बरामदे वाले कमरे में ठहरेंगी। नौकर से कहकर खाली करवा दो।"

जब रामी अपने कमरे को देखने गई, तो कमली ने कहा, "बेटा, [illegible]

देखो न। नीला कितनी सुन्दर थी, परन्तु रामी के सामने निस्तेज प्रतीत हुई है! और रीता दीदी का मुख देखो न, ऐसा पीला पड़ गया कि काटो

रहा था। विवाह बिना किसी
कारण कोठी में विवाह के कोई
विमल के विषय में पूछा तो पण
धार सुना दिया। इसपर उसने
घबराती उसको ड्राइंग-रूम में
ब्राह्मण उसके पास शोकमुद्रा में
बिठा, विमल को उसके आने की
से पूछा, "यह कोई पूजा हो रही

"नहीं देवी!" पण्डित ने बहु
विवाह होना निश्चय हुआ था, प
के समाचार से शायद अब नहीं हो

"नीलादेवी का विवाह किससे
पूछा।

"विमल बाबू से।"

"नीला के पहले विवाह का क

"तो आप नहीं जानती? तला
होने पर भी, पण्डित के मुख पर मुस

रामी पूर्ण परिस्थिति से, इस व
उसके मन में आया कि लौट जाय।
और बोला, "छोटे डॉक्टर साहब
बताओ।"

रामी ने पुन साहस बाँधकर कह
करने आई हूँ।"

अब वह जाने लगी, तो पण्डि
देखा और पूछा, "देवी, कैसी नौकरी

"क्यो? क्या बात है पण्डितजी
साहब ने बुलाया है। यह ठीक है कि
चार विदित होता तो मैं कुछ दिन पीछे
विचार कर रही हूँ।"

"अब सूचना भेजी है तो देख ही ल

रामी अभी विचार कर ही रही थ
से बोला, "चलिये, बुलाया है।"

रामी जाने से ना नहीं कर सकी।

"कहते थे कि वह तुमसे पूछ चुके हैं।"

"पर राय बदल भी तो सकती है?"

"तो उनसे बात कर लो। वे तो कहते थे कि वे जानते हैं कि तुम्हारी राय नहीं बदली।"

"देखो रामो, राय बदली होती तो तुम यहाँ आती नहीं।"

"पर देखिये न, मैं नीला का स्थान लेना नहीं चाहती।"

"यही तो बात है। नीला बदलती रहती है। उससे मेरी बात-चीत हो चुकी है और वह रीता के पास लखनऊ जा रही है।"

"क्यों? उसके पास क्यों?"

"वह कहती है कि उसने उसका सर्वनाश किया है। उसने ही मोहनसिंह से उसका परिचय कराया था और 'स्पेशल मैरेज एक्ट' से विवाह का प्रबन्ध किया था। उस समय मेरे शीघ्र लौटने की आशा नहीं थी। नीला का कहना है कि उसने ही उसका मोहनसिंह से झगड़ा कराया है और तलाक की योजना भी उसकी ही है। मेरे साथ नीला के विवाह का प्रबन्ध भी उसने ही किया था। मुझको इस विवाह के लिये तैयार भी उसीने, तुम पर झूठे लांछन लगाकर, किया था। अब नीला के विवाह करने का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता और वह अपने भाग्य को कोसती हुई, उसीके पास जा रही है, जिसने उसके लिये इतना कुछ किया है। रीता ने उसको बुला भेजा है।"

"वह ऐसा क्यों करती है?"

"जो लोग किसी ध्येय-साधन के लिए उपायों की श्रेष्ठता तथा औचित्य की परवाह नहीं करते, वे ऐसा किया ही करते हैं। अब डॉक्टर जी तुम्हारा कन्यादान करेंगे।"

• •

जोड़े कपड़े रखे हैं। धोतियां थी,
इार। अभिप्राय यह कि आवश्य
इत्यादि शृंगार का सामान भी थ
ले जाकर, वहां रखते हुए कहा, "
है। किसका है यह ?"

"भूल से नहीं गया, मैंने भि

"मुझको इन सबकी आवश्य
है। ये छः मास तक चलेंगे।"

"देखो रामी, विमल ने कल
चाहिए। वह रुपये भी दे गया था
दिया था।"

"तो अब विमलजी को कहूं कि

"हां, ब्रज के पीछे वही घर क
काम-काज से विरक्त हो गए प्रतीत

"तो मैं उनसे कहूंगी, नौकरान

"ठीक है। ओ मक्खन !" उर
आया तो स्वरूपरानी ने कहा, "ये
छोड़ आओ।"

"माताजी, अभी रहने दीजिए

"नहीं, मक्खन, ले जाओ इनको

रामी विमल से मिली और बो
इतने कीमती कपड़े मंगवाने को कह

"तो क्या और अधिक कीमत के

"विमलजी, निर्धन लोगों से
मुझको इनकी आवश्यकता नहीं है।"

"क्यों ?"

"एक नौकरानी को ऐसे कपड़े श

"पर तुम नौकरी किसकी करती

"इस घर की, बिना वेतन के। व

"तो अब तुम्हारी नौकरी नहीं है
उनकी तीसरी लड़की हो और वह तुम्
हैं।"

"मुझसे राय किये बिना ही ?"

(विवरण अगले पृष्ठ पर देखें)

हमारे प्रकाश

उपन्यास :

सावली रात	(गुलशन नन्दा)	४ ५
घाट का पत्थर	,,	४ ५
जलती चट्टान	,,	४·०
निर्मल	(गुरुदत्त)	३·०
निष्णात्	(,,)	३·०
भाग्य का सम्बल	(,,)	३·०
पाप की छाया	(नानकसिंह)	६·५
अपने पराये	(राजवंश)	४·०
पहला वर्ष	(यज्ञदत्त शर्मा)	२·५०
परछाईं	,,	२·२
दर्दे दिल	,,	२·५०
कैदी	(विलियम फाक्नर)	२·००
चार पत्तियां	(एनी काल्वर)	२·००
नये नये चाचाजी	(कट सैंरेडी)	२ ००
सारा संसार मेरा	(आरिग पूडि)	२ ५०
उल्टी गगा	,,	३ ००
बदनाम गली	(कमलेश्वर)	४·००
घेरे के अन्दर	(मन्मथनाथ गुप्त)	२·५०
नदी की लहरें	(कमल शुक्ल)	२·२५
पाच लोफर	(कृश्न चन्दर)	४ ५०
पायल	(कृष्णगोपाल आबिद)	४ ५०

...सी १०) मूल्य की पुस्त...

सेन्टर,

उसके साजन (कुशवाहाकान्त
रैन बसेरा (प्रारिफ)
धूप-छांव "
सूरज का सातवां घोड़ा :
(धर्मवीर भारती)

† नन्दिनी (मामा वरेरकर)
अंगूरी (डा० लक्ष्मीनारायण)
पाकिस्तान मेल (खुशवन्तसिंह)
दूखन लागे नैन (बाजपेयी)
बदनाम गली (कमलेश्वर)
अतीत की परछाइयां
(अमृता प्रीतम)
अभागिन (विजयकुमार गुप्ता)
पाप की छाया (नानकसिंह)
परायी मां (दो उपन्यास) "
फर्ज का देवता (जमुनादास अख्तर
पंजाब की बेटी "
तन का पाप (सत्यपाल विद्यालंकार
तीन देवियां (जगदीश भारती)
लूई की आत्मा (रोमांचकारी)
आदमी और सिक्के (महेन्द्रनाथ)
नींव की मिट्टी : (शिवसागर मिश्र

अंग्रेज़ी से अनूदित उपन्यास

एक राष्ट्रपति (सचित्र)
† पांचवीं बेटी
† आज और कल
† चार पत्नियां